Digitized by eGangotri

मजमउल बहरैन

(समुद्र संगम)

लेखक—दारा शिकोह

१०६५ हि० (१६५४–५५ ई०)

अनुवादक

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी

एम० ए०, पी–एच०डी०, पी० ई० एस०,

सचिव, इतिहास परामर्श समिति,

उत्तर प्रदेश सरकार

लखनऊ

स्कैन्ड/Scanned

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्राक्कथन

मुहम्मद दारा शिकोह के 'मजमउल बहरैन' के इस हिन्दी अनुवाद का प्राक्कथन लिखने का जो अवसर मुझे दिया गया, उसके लिए मैं अनुवादक डा० सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी का अत्यन्त आभारी हूँ।

इस अनुवाद को आज जनसाधारण के सन्मुख लाना अत्यन्त समयोचित है, क्योंकि इस वक़्त बड़ी आवश्यकता है राष्ट्रीय चरित्र में उदारता लाकर भारत के हर एक नागरिक में एकता की भावना जगाने की।

भारतवर्ष अति प्राचीन काल से उदारता और सहिष्णुता का लीला-क्षेत्र रहा है। इसी लिए यहां धार्मिक मतों के लिए "प्रस्थान" अर्थात् 'मार्ग' का प्रयोग किया गया है। लक्ष्य एक होने पर भी मार्ग कई हो सकते हैं और होते भी हैं। इसी लिए पुष्पदन्त ने 'महिम्नस्तोत्र' में शिव जी की स्तुति करते हुए कहा है :--

'त्रयी सांख्यं योगः पशुपति मतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदम् पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्या दृजुकुटिल नानापथ जुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥'

अर्थात्--

'हे ईश्वर, एकमात्र तुम्हारी ही खोज सब करते हैं चाहे तुम्हें पाने के लिए लोग अलग अलग मार्ग (वेद, सांख्य, योग, शैव धर्म, वैष्णव धर्म आदि) का अनुसरण भले ही करें। ये सब मार्ग, जैसे विभिन्न नदियां एक ही सागर को पहुँचती हैं, वैसे ही तुम्हारे पास पहुँचाते हैं।'

परमेश्वरकूटस्थ नित्य है, उसका स्वरूप नहीं बदलता। उस तक पहुँचने के लिए भले ही कई प्रस्थान, कई धर्म हों। इन सभी धर्मों के अनुयायी सहयात्री हैं, भाई भाई हैं--यही भारत की संस्कृति है और प्रस्तुत ग्रन्थ इसी उदार भावना का प्रतीक है।

आशा है कि दारा शिकोह की यह कृति पाठकों को ऐसी प्रेरणा देगी जिससे सारा संसार यह कह उठे कि भारतीयों ने "उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्" इस सूक्ति को चरितार्थ कर दिखाया।

मसूरी दिसम्बर १९६१ — आदित्य नाथ झा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्राक्कथन

मुहम्मद दारा शिकोह के 'मजमउल बहरैन' के इस हिन्दी अनुवाद का प्राक्कथन लिखने का जो अवसर मुझे दिया गया, उसके लिए मैं अनुवादक डा० सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी का अत्यन्त आभारी हूं।

इस अनुवाद को आज जनसाधारण के सन्मुख लाना अत्यन्त समयोचित है, क्योंकि इस वक़्त बड़ी आवश्यकता है राष्ट्रीय चरित्र में उदारता लाकर भारत के हर एक नागरिक में एकता की भावना जगाने की।

भारतवर्ष अति प्राचीन काल से उदारता और सहिष्णुता का लीला-क्षेत्र रहा है। इसी लिए यहां धार्मिक मतों के लिए "प्रस्थान" अर्थात् 'मार्ग' का प्रयोग किया गया है। लक्ष्य एक होने पर भी मार्ग कई हो सकते हैं और होते भी हैं। इसी लिए पुष्पदन्त ने 'महिम्नस्तोत्र' में शिव जी की स्तुति करते हुए कहा है :--

'त्रयी सांख्यं योगः पशुपति मतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदम् पथ्यमिति च। /तः
रुचीनां वैचित्र्या दृजुकुटिल नानापथ जुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।'

अर्थात्--

'हे ईश्वर, एकमात्र तुम्हारी ही खोज सब करते हैं चाहे तुम्हें पाने के लिए लोग अलग अलग मार्ग (वेद, सांख्य, योग, शैव धर्म, वैष्णव धर्म आदि) का अनुसरण भले ही करें। ये सब मार्ग, जैसे विभिन्न नदियां एक ही सागर को पहुँचती हैं, वैसे ही तुम्हारे पास पहुँचाते हैं।'

परमेश्वरकूटस्थ नित्य है, उसका स्वरूप नहीं बदलता। उस तक पहुँचने के लिए भले ही कई प्रस्थान, कई धर्म हों। इन सभी धर्मों के अनुयायी सहयात्री हैं, भाई भाई हैं--यही भारत की संस्कृति है और प्रस्तुत ग्रन्थ इसी उदार भावना का प्रतीक है।

आशा है कि दारा शिकोह की यह कृति पाठकों को ऐसी प्रेरणा देगी जिससे सारा संसार यह कह उठे कि भारतीयों ने "उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्" इस सूक्ति को चरितार्थ कर दिखाया।

SPS
891.431 M 20 CH

आदित्य नाथ झा

मसूरी दिसम्बर १९६१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भूमिका

दारा शिकोह

भारतवर्ष तथा अरब के व्यापारिक सम्बन्ध इस्लाम के अभ्युदय के बहुत पूर्व ही प्रारम्भ हो चुके थे। इस्लाम के प्रादुर्भाव के उपरान्त मुस्लिम अरब व्यापारी अपने धार्मिक सिद्धान्तों से भी भारतवासियों को परिचित कराने लगे। उस समय जिन बन्दरगाहों से अरबों का व्यापारिक सम्बन्ध था उनमें सिंध, गुजरात, बिलोचिस्तान और दक्षिणी भारत के बन्दरगाह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हिन्दुस्तान में तुर्कों के राज्य की स्थापना के सैकड़ों वर्ष पूर्व अरब, सरनद्वीप, मालद्वीप, मलाबार, कोलम (आधुनिक ट्रावनकोर), कारोमंडल, चमयूर, थाना, खम्बायत, गंधार, चंदापूर, फाकूर (बरकूर), मंगलौर इत्यादि में बस चुके थे। हिन्दू राजा उनका बड़ा आदर-सम्मान करते थे और उन्हें विशेष धार्मिक सुविधायें प्राप्त थीं। इस सम्पर्क के कारण अरबी के अनेक ग्रंथों में भारतवर्ष के भूगोल, उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों का उल्लेख हुआ है। जाहिज़ (मृत्यु ८६४ ई०) इब्ने खुरदाज़बेह (मृत्यु लगभग ९१२ ई०), सुलेमान ताजिर (९वीं शती ई०), अबजद हसन सैराफ़ी (९वीं शती ई०), बलाज़ुरी (मृत्यु ८९२ ई०), याज़ूबी (मृत्यु ९०० ई०), इब्ने फ़क़ीह हमदानी (९वीं शती ई०), इब्ने रुस्ता (९वीं शती ई०), बुज़ुर्ग बिन शहरयार (१०वीं शती ई०), अबुल हसन मसऊदी (मृत्यु ९५७ ई०), मुतहर बिन ताहिर मुक़दिसी (१०वीं शती ई०), इस्तखरी (मृत्यु ९५१ ई० के बाद), बशारी मुक़दिसी (मृत्यु ९८५ ई० के बाद) इत्यादि के ग्रंथों में भारतवर्ष के बड़े रोचक विवरण मिलते हैं। अबूरैहान अलबेरूनी की "तारीखुल हिन्द" जिसकी रचना १०३०-१०३३ ई० में हुई भारतवर्ष के प्राचीन धर्म एवं संस्कृति के ज्ञान का बहुमूल्य भंडार है।

१३वीं शती ई० के प्रारम्भ में उत्तरी भारत में तुर्कों ने अपना राज्य स्थापित कर लिया। गूर, ग़ज़नी तथा आसपास के देश जहां के वे निवासी थे. बौद्ध धर्म के बहुत बड़े केन्द्र रह चुके थे। प्राचीन सासानी सभ्यता एवं ईरान की उस संस्कृति से भी वे प्रभावित थे. जो अरबों की विजय के बाद भी न मिट सकी थी। इसी शती ई० में मंगोलों की विजय के बढ़ते हुये तूफ़ान ने उन समस्त देशों एवं नगरों को विध्वन्स कर दिया जो किसी समय इस्लामी सभ्यता के बहुत बड़े केन्द्र थे। वहां के प्रायः विद्वान् भारतवर्ष में शरण लेने लगे। तुर्कों को भी हमेशा के लिये अपनी जन्मभूमि को भुला देना पड़ा और वे भारतवर्ष को ही अपना देश जानने लगे। हर प्रकार के मुसलमान आलिमों के भारतवर्ष में पहुंच जाने के उपरान्त उनके समक्ष इस समस्या ने भी गम्भीर रूप धारण कर लिया कि वे यहां के हिन्दुओं से किस प्रकार का व्यवहार करें। शरीअत के कौन से नियम लागू किए जायें जिनसे तुर्कों के राज्य में किसी प्रकार का विघ्न भी न पड़े और मुसलमान आलिम भी संतुष्ट रहें। सौभाग्य से उसी समय के चिश्ती सिलसिले के सूफ़ियों ने इस समस्या के समाधान में बड़ा ही महत्वपूर्ण भाग लिया। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, शेख फ़रीदुद्दीन गंजशकर, शेख क़ुतुबुद्दीन बख्तियार काकी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया तथा अमीर खुसरो एवं उनके शिष्य उस कटुता को जो संकीर्ण विचारों के मुसलमान आलिम भारतवर्ष में उत्पन्न करना चाहते थे, बहुत कुछ कम करते रहे। यद्यपि उन्होंने कभी भी हिन्दू जनता में अपने धार्मिक विचारों के प्रचार का कोई प्रयत्न नहीं किया किन्तु फिर भी उनका सरल जीवन यहां के निवासियों को हर प्रकार से प्रभावित करता रहा और धीरे-धीरे लोगों को इस बात का विश्वास होता गया कि दोनों ही बिना एक दूसरे से टकराये हुये जीवित रह सकते हैं। १५वीं शती ई० में नवीन भक्ति-आन्दोलन ने इस विचारधारा को और भी आगे बढ़ाया। मुसलमान सूफ़ियों की संगीत की महफ़िलों में हिन्दी संगीत के प्रचार ने साधारण मुसलमानों को हिन्दू संस्कारों एवं प्रतीकों से भली-भांति परिचित कर दिया। १६वीं शती ई० के मध्य ही में इस बात की आवश्यकता को अनुभव किया जाने लगा कि हिन्दी गानों में जिन देवी-देवताओं एवं प्रतीकों का उल्लेख होता है उनके विषय में मुसलमानों को भली भांति परिचित कराया जाय। इसी कारण बिलग्राम निवासी मीर अब्दुल वाहिद (मृत्यु १६०८ ई०) ने "हक़ायक़े हिन्दी[1]" की रचना १५६६ई० में की। अकबर ने भी हिन्दुओं के प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद कराने की योजना इसी कारण बनाई कि मुसलमान फ़ारसी भाषा द्वारा हिन्दुओं के धार्मिक विचारों एवं संस्कारों को भली-भांति समझ सकें। इस योजना के अन्तर्गत महाभारत तथा रामायण के फ़ारसी अनुवाद तैयार कराये गये। महाभारत के फ़ारसी अनुवाद की भूमिका अकबर के प्रसिद्ध परामर्शदाता शेख़ अबुल फ़ज़ल ने लिखी जिसमें उसने अकबर की योजना को पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दिया है, किन्तु दोनों धर्मों के तथ्यों को तुलनात्मक ढंग से प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण कार्य दारा शिकोह ने किया।

मुहम्मद दारा शिकोह, शाहजहां का ज्येष्ठ पुत्र था। उसका जन्म अजमेर के निकट स्थित सागरताल नामक झील के समीप सोमवार २० मार्च, १६१५ ई० को हुआ। वह स्वयं लिखता है कि "मेरे पिता के तीन पुत्रियां पैदा हो चुकी थीं और उनकी शुभ अवस्था २४ साल को प्राप्त हो चुकी थी। उन्होंने हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के प्रति अत्यधिक श्रद्धा के कारण पुत्र के लिय प्रार्थना की और उनके आशीर्वाद के फलस्वरूप इस तुच्छ का जन्म हुआ। १३ वर्ष की अवस्था में मकतब में बिठाला गया और मीर अब्दुल्लतीफ़ सुल्तानपुरी को गुरू नियुक्त किया गया। उसने अन्य मुग़ुल शाहज़ादों की भांति क़ुरान, हदीस एवं फ़ारसी कविताओं के अध्ययन से अपनी शिक्षा प्रारम्भ की किन्तु उसे सूफ़ियों की जीवनियों के अध्ययन से भी बड़ी रुचि थी और वह उनका अध्ययन किया करता था। धीरे-धीरे वह मुसलमान सूफ़ियों तथा हिन्दू संतों के सम्पर्क में आने लगा और सबसे अधिक मियां मीर (मृत्यु० १६३५ ई०) तथा मुल्ला शाह बदख़्शी (मृत्यु १६६१ ई०) ने उसके जीवन को प्रभावित किया। इनके अतिरिक्त शाह मुहिबुल्लाह शाह दिलरुबा, शाह मुहम्मद लिसानुल्लाह, बाबा लाल दास बैरागी, कुछ कबीर पंथियों तथा जगन्नाथ मिश्र ने भी उसे

---

१. इसका हिन्दी अनुवाद नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा सं० २०१४ में प्रकाशित हो चुका है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भूमिका

दारा शिकोह

भारतवर्ष तथा अरब के व्यापारिक सम्बन्ध इस्लाम के अभ्युदय के बहुत पूर्व ही प्रारम्भ हो चुके थे। इस्लाम के प्रादुर्भाव के उपरान्त मुस्लिम अरब व्यापारी अपने धार्मिक सिद्धान्तों से भी भारतवासियों को परिचित कराने लगे। उस समय जिन बन्दरगाहों से अरबों का व्यापारिक सम्बन्ध था उनमें सिंध, गुजरात, बिलोचिस्तान और दक्षिणी भारत के बन्दरगाह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हिन्दुस्तान में तुर्कों के राज्य की स्थापना के सैकड़ों वर्ष पूर्व अरब, सरनद्वीप, मालद्वीप, मलाबार, कोलम (आधुनिक ट्रावनकोर), कारोमंडल, चमयूर, थाना, खम्बायत, गंधार, चंदापुर, पाकूर (बरकूर), मंगलौर इत्यादि में बस चुके थे। हिन्दू राजा उनका बड़ा आदर-सम्मान करते थे और उन्हें विशेष धार्मिक सुविधायें प्राप्त थीं। इस सम्पर्क के कारण अरबी के अनेक ग्रंथों में भारतवर्ष के भूगोल, उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों का उल्लेख हुआ है। जाहिज़ (मृत्यु ८६४ ई०) इब्ने खुरदाज़बेह (मृत्यु लगभग ९१२ ई०), सुलेमान ताजिर (९वीं शती ई०), अबजद हसन सैराफ़ी (९वीं शती ई०), बलाज़ुरी (मृत्यु ९९२ ई०), याक़ूबी (मृत्यु ९०० ई०), इब्ने फ़क़ीह हमदानी (९वीं शती ई०), इब्ने रुस्ता (९वीं शती ई०), बुज़ुर्ग बिन शहरयार (१०वीं शती ई०), अबुल हसन मसऊदी (मृत्यु ९५७ ई०), मुतहर बिन ताहिर मुक़दिसी (१०वीं शती ई०), इस्तखरी (मृत्यु ९५१ ई० के बाद), बशारी मुक़दिसी (मृत्यु ९८५ ई० के बाद) इत्यादि के ग्रंथों में भारतवर्ष के बड़े रोचक विवरण मिलते हैं। अबूरैहान अलबेरूनी की "तारीख़ुल हिन्द" जिसकी रचना १०३०-१०३३ ई० में हुई भारतवर्ष के प्राचीन धर्म एवं संस्कृति के ज्ञान का बहुमूल्य भंडार है।

१३वीं शती ई० के प्रारम्भ में उत्तरी भारत में तुर्कों ने अपना राज्य स्थापित कर लिया। ग़ूर, ग़ज़नी तथा आसपास के देश जहां के वे निवासी थे. बौद्ध धर्म के बहुत बड़े केन्द्र रह चुके थे। प्राचीन सासानी सभ्यता एवं ईरान की उस संस्कृति से भी वे प्रभावित थे. जो अरबों की विजय के बाद भी न मिट सकी थी। इसी शती ई० में मंगोलों की विजय के बढ़ते हुये तूफ़ान ने उन समस्त देशों एवं नगरों को विध्वन्स कर दिया जो किसी समय इस्लामी सभ्यता के बहुत बड़े केन्द्र थे। वहां के प्रायः विद्वान् भारतवर्ष में शरण लेने लगे। तुर्कों को भी हमेशा के लिये अपनी जन्मभूमि को भुला देना पड़ा और वे भारतवर्ष को ही अपना देश जानने लगे। हर प्रकार के मुसलमान आलिमों के भारतवर्ष में पहुंच जाने के उपरान्त उनके समक्ष इस समस्या ने भी गम्भीर रूप धारण कर लिया कि वे यहां के हिन्दुओं से किस प्रकार का व्यवहार करें। शरीअत के कौन से नियम लागू किए जायें जिनसे तुर्कों के राज्य में किसी प्रकार का विघ्न भी न पड़े और मुसलमान आलिम भी संतुष्ट रहें। सौभाग्य से उसी समय के चिश्ती सिलसिले के सूफ़ियों ने इस समस्या के समाधान में बड़ा ही महत्वपूर्ण भाग लिया। ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, शेख फ़रीदुद्दीन गंजशकर, शेख क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया तथा अमीर ख़ुसरो एवं उनके शिष्य उस कटुता को जो संकीर्ण विचारों के मुसलमान आलिम भारतवर्ष में उत्पन्न करना चाहते थे, बहुत कुछ कम करते रहे। यद्यपि उन्होंने कभी भी हिन्दू जनता में अपने धार्मिक विचारों के प्रचार का कोई प्रयत्न नहीं किया किन्तु फिर भी उनका सरल जीवन यहां के निवासियों को हर प्रकार से प्रभावित करता रहा और धीरे-धीरे लोगों को इस बात का विश्वास होता गया कि दोनों ही बिना एक दूसरे से टकराये हुये जीवित रह सकते हैं। १५वीं शती ई० में नवीन भक्ति-आन्दोलन ने इस विचारधारा को और भी आगे बढ़ाया। मुसलमान सूफ़ियों की संगीत की महफ़िलों में हिन्दी संगीत के प्रचार ने साधारण मुसलमानों को हिन्दू संस्कारों एवं प्रतीकों से भली-भांति परिचित कर दिया। १६वीं शती ई० के मध्य ही में इस बात की आवश्यकता को अनुभव किया जाने लगा कि हिन्दी गानों में जिन देवी-देवताओं एवं प्रतीकों का उल्लेख होता है उनके विषय में मुसलमानों को भली भांति परिचित कराया जाय। इसी कारण बिलग्राम निवासी मीर अब्दुल वाहिद (मृत्यु १६०८ ई०) ने "हक़ायक़े हिन्दी"[1] की रचना १५६६ ई० में की। अकबर ने भी हिन्दुओं के प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद कराने की योजना इसी कारण बनाई कि मुसलमान फ़ारसी भाषा द्वारा हिन्दुओं के धार्मिक विचारों एवं संस्कारों को भली-भांति समझ सकें। इस योजना के अन्तर्गत महाभारत तथा रामायण के फ़ारसी अनुवाद तैयार कराये गये। महाभारत के फ़ारसी अनुवाद की भूमिका अकबर के प्रसिद्ध परामर्शदाता शेख अबुल फ़ज़्ल ने लिखी जिसमें उसने अकबर की योजना को पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दिया है, किन्तु दोनों धर्मों के तथ्यों को तुलनात्मक ढंग से प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण कार्य दारा शिकोह ने किया।

मुहम्मद दारा शिकोह, शाहजहां का ज्येष्ठ पुत्र था। उसका जन्म अजमेर के निकट स्थित सागरताल नामक झील के समीप सोमवार २० मार्च, १६१५ ई० को हुआ। वह स्वयं लिखता है कि "मेरे पिता के तीन पुत्रियां पैदा हो चुकी थीं और उनकी शुभ अवस्था २४ साल को प्राप्त हो चुकी थी। उन्होंने हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के प्रति अत्यधिक श्रद्धा के कारण पुत्र के लिय प्रार्थना की और उनके आशीर्वाद के फलस्वरूप इस तुच्छ का जन्म हुआ। १३ वर्ष की अवस्था में मकतब में बिठाला गया और मीर अब्दुललतीफ़ सुल्तानपुरी को गुरू नियुक्त किया गया। उसने अन्य मुग़ुल शाहज़ादों की भांति क़ुरान, हदीस एवं फ़ारसी कविताओं के अध्ययन से अपनी शिक्षा प्रारम्भ की किन्तु उसे सूफ़ियों की जीवनियों के अध्ययन से भी बड़ी रुचि थी और वह उनका अध्ययन किया करता था। धीरे-धीरे वह मुसलमान सूफ़ियों तथा हिन्दू संतों के सम्पर्क में आने लगा और सबसे अधिक मियां मीर (मृत्यु० १६३५ ई०) तथा मुल्ला शाह बदख़्शी (मृत्यु १६६१ ई०) ने उसके जीवन को प्रभावित किया। इनके अतिरिक्त शाह मुहिबुल्लाह शाह दिलरुबा, शाह मुहम्मद लिसानुल्लाह, बाबा लाल दास बैरागी, कुछ कबीर पंथियों तथा जगन्नाथ मिश्र ने भी उसे

---

१. इसका हिन्दी अनुवाद नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा सं० २०१४ में प्रकाशित हो चुका है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिन्दुओं तथा मुसलमानों के विचारों को समझाने की ओर प्रेरित कर दिया। उसने संस्कृत का भी अध्ययन किया और बनारस के पंडितों की सहायता से उपनिषद्, योगवशिष्ठ एवं भागवत्गीता के अनुवाद कराये। दारा शिकोह के ग्रंथों को पढ़ने से पता चलता है कि उसने हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन एवं प्रचार केवल सत्य की खोज एवं सत्य को समझने के लिये ही किया। १८ वर्ष की अवस्था में उसका विवाह उसके चाचा शाह परवेज़ की पुत्री नादिरा बेगम से हो गया (१६३३ ई०)।

दारा शिकोह की रचनायें

१—सफ़ीनतुल औलिया : दारा शिकोह ने सर्वप्रथम सफ़ीनतुल औलिया नामक ग्रंथ की रचना २७ रमज़ान १०४९ हि० (२१ जनवरी १६४० ई०) को समाप्त की। उस समय उसकी अवस्था २५ वर्ष थी। इस ग्रंथ में उसने हज़रत मुहम्मद, चारों ख़लीफ़ाओं, बारह इमामों तथा विभिन्न सिलसिले के सूफ़ी संतों की चर्चा की है। इनमें क़ादिरी, नक़्शबन्दी, चिश्ती, कुबरवी तथा सुहरवर्दी सिलसिले उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त उसने फुटकर सूफ़ी संतों तथा संत महिलाओं की जीवनियां भी लिखी हैं। वह स्वयं क़ादिरी सिलसिले से सम्बन्धित था किन्तु अन्य सिलसिलों से भी उसने सहानुभूति का परिचय दिया है। मुल्ला अब्दुर्रहमान जामी (मृत्यु १४९२ ई०) की जीवनी के प्रसंग में उसने लिखा है कि, "यह फ़क़ीर सर्वदा उनके ग्रंथ के तथा पद्य के ग्रंथों का अध्ययन किया करता है और उनकी रचनाओं के आशीर्वाद से लाभान्वित होता रहता है। सफ़ीनतुल औलिया नामक यह ग्रंथ उन्हीं का अनुकरण करते हुये तथा उन्हीं के शिष्य के रूप में लिखा है।" सफ़ीनतुल औलिया के अध्ययन से पता चलता है कि उसने सूफ़ियों की जीवनियां लिखते समय काफ़ी छानबीन की और अप्रमाणित तथा संदिग्ध बातों को यथासम्भव नहीं लिखा है। मियां मीर से भेंट का उल्लेख करते हुये वह लिखता है कि, "यह फ़क़ीर उनकी सेवा में पहुंचा। उन्होंने उसके प्रति विशेष कृपादृष्टि प्रदर्शित की। २१ वर्ष की अवस्था में इस फ़क़ीर को ऐसा कठिन रोग लग गया कि चिकित्सक उसकी चिकित्सा में असमर्थ हो गये। जब शाहजहां पादशाह, मियां मीर के घर पहुंचे तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर कहा कि 'यह मेरा ज्येष्ठ पुत्र है और चिकित्सक इसके स्वास्थ्य की ओर से निराश हो चुके हैं। आप दुआ करें, सम्भव है कि ईश्वर इस पर कृपा करें।' मियां मीर ने पानी का प्याला मंगवाया और एक दुआ पढ़ कर पानी को फूंका और फ़क़ीर को दे दिया। उसे पीते ही उसी सप्ताह में यह फ़क़ीर पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया और वह रोग जाता रहा।"

२—सकीनतुल औलिया : सफ़ीनतुल औलिया की रचना के तीन साल बाद ही १०५२ हि० (१६४२ ई०) में उसने २८ वर्ष की अवस्था में सकीनतुल औलिया की रचना की। इसमें उसने लाहौर के प्रसिद्ध संत मियां मीर अथवा शाह मीर एवं उनके कुछ शिष्यों, विशेष रूप से मुल्ला शाह का सविस्तार उल्लेख किया है। यह तीन भागों में विभाजित है : पहिले भाग में मियां मीर की जीवनी की चर्चा ६ अध्यायों में की गई है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और उनके तथा जहांगीर एवं शाहजहां के सम्बन्ध पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे भाग में मियां मीर की बहिन बीबी जमाल खातून की जीवनी एवं चमत्कारों का उल्लेख किया गया है। तीसरे भाग में मियां मीर के शिष्यों की जीवनियां दो अध्यायों में लिखी गई हैं। पहिले अध्याय में उन फ़क़ीरों का हाल लिखा गया है जिनका निधन १०५२ हि० (१६४२-४३ ई०) के पूर्व हो चुका था और दूसरे अध्याय में दारा शिकोह ने अपने समकालीन अन्य सूफ़ियों का विवरण दिया है और इसी अध्याय में मुल्ला शाह की चर्चा की है।

३––हसनातुल आरेफ़ीन : १रबी-उल-अव्वल १०६४ हि० (२० जनवरी १६५४ ई०) को उसने हसनातुल आरेफ़ीन अथवा शतहियात की रचना समाप्त की। उसने इस ग्रंथ की भूमिका में लिखा है कि १०६२ हि० (१६५२ ई०) से जब वह ३८ वर्ष की अवस्था को प्राप्त हो गया तो उसे एकेश्वरवाद सम्बन्धी रचनाओं के अतिरिक्त किसी अन्य रचना के अध्ययन से कोई रुचि न रही। अतः उसने इस ग्रंथ में इसी मत के अनुयायी संतों के कथन संकलित किये। सूफ़ी संतों से सम्पर्क के कारण मुल्लाओं ने उसका कड़ा विरोध प्रारम्भ कर दिया था, अतः हसनातुल आरेफ़ीन में उसने भी खुलकर मुल्लाओं की निन्दा की है। वह लिखता है :

स्वर्ग वहीं है जहां मुल्ला न रहते हों,
जहां उनके वादविवाद एवं कलह का शोर न सुनाई देता हो,
ईश्वर करे संसार को मुल्लाओं के शोरगुल से मुक्ति प्राप्त हो जाय,
और कोई भी उनके फ़तवों पर ध्यान न दे।
जिस नगर में भी कोई मुल्ला बस जाता है,
वहां कोई भी बुद्धिमान् ठहरना पसन्द नहीं करेगा।

४–– रिसालय हक़नुमा : इस रिसाले की रचना उसने १०५६ हि० (१६४६ ई०) में की। इसमें साधारण लोगों की सुविधा हेतु प्रसिद्ध सूफ़ियों के कथन संक्षिप्त रूप से संकलित किये गये हैं।

इनके अतिरिक्त "तरीक़त व हक़ीक़त" नामक एक संक्षिप्त ग्रंथ भी दारा शिकोह की रचना बताया जाता है। दारा शिकोह की कविताओं का संग्रह अथवा दीवान भी अप्राप्य है, किन्तु उसे कविताओं से बड़ी रुचि थी और वह समय समय पर रुबाइयों तथा ग़ज़लों की रचना किया करता था। उसके दीवान की एक प्रति का उल्लेख जरनल रायल एशियाटिक सोसायटी बंगाल में खान बहादुर ज़फ़र हसन ने १९३९ ई० में किया। इसमें १३३ गज़लें तथा २८ रुबाइयां हैं। इन रुबाईयों तथा ग़ज़लों के अध्ययन से उसके विचार स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाते हैं। वह लिखता है :

तू मुझे कष्ट देने के लिये काफ़िर कहता है,
मैं भी तेरी बात सत्य समझता हूं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मेरे लिये ऊंच नीच सब बराबर हो गए हैं,

(इस्लाम के) बहत्तर समुदाय ही मेरा धर्म है।

तौहीद सर्वदा चुप रहने एवं ध्यानमग्न रहने (का नाम) है,

वादविवाद से तौहीद का अन्त हो जाता है।

× × × ×

जब तू तौहीद का नाम लेने लगता है,

तभी से उसका अन्त हो जाता है॥

× × × ×

सल्तनत आसान है, अपने आप को फ़क़ीरी से परिचित कर ले,

यदि बून्द समुद्र बन सकती है तो फिर वह मोती क्यों बने।

१०६४ हि० (१६५३-५४ ई०) तक दारा शिकोह मुसलमान संतों एवं सूफ़ियों की रचनाओं का अध्ययन करता रहा, किन्तु उसके बाद उसने हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथों का भी अध्ययन प्रारम्भ कर दिया और १०६५ हि० (१६५४-५५ ई०) में उसने "मजमउल बहरैन"[१] की रचना की। इस रचना की भूमिका में उसने स्पष्ट रूप से हिन्दू तथा इस्लाम दोनों धर्मों को आमने सामने के दो बिन्दुओं के समान बताया है और इस बात की घोषणा कर दी है कि दोनों धर्मों में शब्दों के भेद के अतिरिक्त कोई अन्तर नहीं। दोनों एक ही तथ्य का निरूपण करते हैं। दारा शिकोह को इस बात का विश्वास था कि साधारणत: हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही उसके विचारों से सहमत न हो सकेंगे अत: उसने यह बात स्पष्ट कर दी है कि यह ग्रंथ उसने विशेष रूप से अपने घर वालों के लिये लिखा है। इस रचना में उसने केवल दोनों धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया है और दोनों ही की विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। किसी को घटाने अथवा बढ़ाने की कोई चेष्टा नहीं की है। उसने इस ग्रंथ में निम्नांकित विषयों पर प्रकाश डाला है :—

१—अनासिर (तत्व)

२—हवास (इन्द्रिय)

३—शग़्ल (भक्ति)

४—सिफ़ते अल्लाह तआला (सर्वोच्च ईश्वर के गुण)

५—रूह (आत्मा)

६—बाद (वायु)

७—आलमे अरबेआ (चार जगत)

८—आवाज़ (ध्वनि)

९—नूर (प्रकाश)

१०—रूयत (ईश्वर-दर्शन)

११—इस्माये अल्लाह तआला (सर्वोच्च ईश्वर के नाम)

---

१. समुद्र संगम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१२—नबूवत व विलायत
१३—ब्रह्मांड
१४—जिहात (दिशा)
१५—आसमान (आकाश)
१६—ज़मीन (पृथ्वी)
१७—क़िस्मते ज़मीन (पृथ्वी-खंड)
१८—आलमे बरज़ख़ (मृत्यु तथा पुनरुत्थान की अन्तरवेला)
१९—क़यामत (प्रलय)
२०—मुक्ति
२१—रोज़ व शब (अहोरात्र)
२२—बेनिहायतिये अदवार (कालचक्र की अन्तता)

इस रचना को भी उसने मुहम्मद साहब एवं उनकी संतान तथा मित्रों की प्रशंसा से प्रारम्भ किया है अतः इससे कहीं भी नहीं पता चलता कि उसने इस्लाम त्याग कर किसी अन्य धर्म का पालन प्रारम्भ कर दिया था। दारा शिकोह ने इस्लाम का पालन करते हुये ही हिन्दुओं के धार्मिक सिद्धान्तों से इस्लाम का समन्वय करने का प्रयत्न किया है। दोनों धर्मों के सिद्धान्तों की तुलना करते हुए दारा शिकोह ने जो कुछ लिखा है उनमें से कुछ बातों के विषय में दोनों धर्मों के विद्वानों का सहमत होना सम्भव नहीं और कुछ बातें तो बड़ी ही साधारण सी ज्ञात होती हैं किन्तु इसमें संदेह नहीं कि दोनों ही धर्मों से उसे अत्यधिक सहानुभूति थी और उसने जो कुछ भी लिखा है, वह बड़ा ही सराहनीय है।

सिर्रे अकबर : दारा शिकोह ने १०६७ हि० (१६५६-५७ई०) में उपनिषद् के लगभग ५० अध्यायों का अनुवाद "सिर्रे अकबर" अथवा "सिर्रुल असरार" के नाम से कराया है। उपनिषद् के अनुवाद का शीर्षक "सिर्रुल असरार" अथवा "रहस्यों के रहस्य" या गुह्याद्-गुह्यतमः से बढ़ कर कुछ सोचना सम्भव नहीं। संस्कृत के जटिल वाक्यों का अनुवाद जिस सरलता से एवं सुन्दरता से दारा शिकोह ने फ़ारसी में किया है, वही इस अनुवाद की सबसे बड़ी विशेषता है। उसने लिखा है कि "मैंने हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन किया, वे लोग एकेश्वरवाद का खंडन नहीं करते। उपनिषदों में चारों वेदों के एकेश्वरवाद सम्बन्धी श्लोक तथा उनकी व्याख्या संकलित की गई है। अतः मैंने १०६७ हि० में बनारस के पंडितों एवं सन्यासियों की सहायता से इसका शुद्ध फ़ारसी अनुवाद करना प्रारम्भ किया।" उसने यह भी लिखा है कि उसे अपने अध्ययन में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, उनका इन प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन से समाधान हो जाता था। इन्हें एकेश्वरवाद का समुद्र कहा जा सकता है क्योंकि इनमें कोई ऐसी बात नहीं जो कि क़ुरान के विरुद्ध हो।

भागवत्गीता : लगभग इसी समय उसने भागवत्गीता का भी अनुवाद कराया। दारा शिकोह ने कुछ ग्रंथों की रचना दूसरों से कराई। कुछ ग्रंथ उसके नाम पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

समर्पित भी किये गये। जो ग्रंथ उसके आदेशानुसार लिखे गये उनमें निम्नांकित बड़े ही महत्वपूर्ण हैं :

१—मकालेमये दारा शिकोह व बाबा लाल : इस ग्रंथ में बाबा लाल नामक पंजाब के एक हिन्दू संत तथा दारा शिकोह की हिन्दू धर्म एवं हिन्दुओं के धार्मिक सिद्धान्तों के विषय में वार्ता का उल्लेख किया गया है। कहा जाता है कि बाबा लाल का नाम लाल दयाल था और वे कसूर के खत्री थे तथा बटाला के समीप ध्यानपुर में उनका स्थान था। दारा शिकोह बाबा लाल की सेवा में स्वयं जाना चाहता था किन्तु जब उन्हें दारा शिकोह की इच्छा का ज्ञान हुआ तो वे खुद ही लाहौर पहुंच गये। सम्भवतः यह वार्ता दारा शिकोह के क़ंधार से १०६२ हि० (१६५१–५२ ई०) में लौटने के बाद हुई क्योंकि हसनातुल आरेफ़ीन में, जिसे उसने १०६४ हि० में पूरा किया, उसने बाबा लाल की अत्यधिक प्रशंसा की है। "मजमउल बहरैन" में भी उसने बाबा लाल वैरागी की भी चर्चा की है। इससे पता चलता है कि दारा शिकोह बाबा लाल से अत्यधिक प्रभावित था।

२—योग वशिष्ठ : योग वशिष्ठ का भी फ़ारसी अनुवाद दारा शिकोह के आदेशानुसार कराया गया। अनुवाद की भूमिका से पता चलता है कि लेखक ने यह कार्य १०६६ हि० (१६५५-५६ई०) में प्रारम्भ किया। कहा जाता है कि वशिष्ठ तथा रामचन्द्र जी दोनों ने दारा शिकोह को एक रात्रि में दर्शन दिये जिससे प्रभावित होकर दारा शिकोह ने इस महत्वपूर्ण ग्रंथ का अनुवाद करवाया।

३—तारीखे शमशेर खानी : यह फ़िरदौसी के प्रसिद्ध शाहनामे का संक्षिप्त संस्करण है।

कला से प्रेम

दारा शिकोह ने सुलेख की शिक्षा आक़ा अब्दुर्रशीद देलमी से प्राप्त की थी और नस्तालीक़[1] तथा नस्ख[2] दोनों प्रकार की लिपियों के लिखने में अत्यधिक कुशलता प्राप्त कर ली थी। उसके हाथ की लिखी हुई कुछ पुस्तकें विभिन्न पुस्तकालयों में अब भी मौजूद हैं।

(१) खुदाबख्श लाइब्रेरी बांकीपुर पटना में दारा शिकोह के हाथ की लिखी "सफ़ीनतुल औलिया" की एक प्रति बताई जाती है जिसे उसने १०५०हि० (१६४०-४१ई०) में नक़ल किया था।[3]

---

१. वह लिपि जिसमें उर्दू की लीथो की पुस्तकें छापी जाती हैं।
२. वह लिपि जिसमें साधारणतः क़ुरान शरीफ़ एवं अरबी के ग्रंथ नक़ल किये जाते तथा छापे जाते हैं।
३. खान बहादुर अब्दुल मुक़्तदिर : Catalogue of Persian Mss. in the Oriental Public Library Patna, Vol. VIII, pp. 47-48.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(२) अज़ीज़ बाग़ लाइब्रेरी हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) में १०५१ हि० (१६४१-४२ ई०) का दारा शिकोह के हाथ का लिखा हुआ एक क़ुरान बताया जाता है[१]।

(३) विक्टोरिया मेमोरियल हाल कलकत्ते में भी एक पंजसूरा है जो दारा शिकोह के हाथ का बताया जाता है।

(४) इनके अतिरिक्त विभिन्न पुस्तकालयों में बहुत सी वस्लियाँ[२] ऐसी हैं जिनके विषय में कहा जाता है कि उन्हें दारा शिकोह ने लिखा था।

राजनीतक जीवन

दारा शिकोह राजनीतिक कार्यों का अधिक अनुभव प्राप्त न कर सका। १०४३ हि० (१६३३ ई०) में उसे १२,००० ज़ात और ६००० सवार का मंसब प्रदान हुआ और हिसार की सरकार उसे जागीर में दी गई। उसके मंसब में निरन्तर वृद्धि होती रही, यहां तक कि उसे ६०,००० ज़ात तथा ४०,००० सवार का मंसब प्राप्त हो गया। उसे १०५५ हि० (१६४५ई०) में इलाहाबाद, १०५७हि० (१६४७ई०) में पंजाब, १०५९हि० (१६४९ई०) में गुजरात और १०६२ हि० (१६५२ ई०) में मुल्तान तथा काबुल की सूबेदारी प्रदान हुई, किन्तु इन सूबों में उसके प्रतिनिधि ही कार्य करते रहे और वह केवल लाहौर में ही कुछ समय के लिये कार्य हेतु पहुँच सका। १०६३ हि० (१६५३ ई०) में उसे क़न्धार पर आक्रमण करने के लिये भेजा गया किन्तु उसे इस आक्रमण में सफलता न प्राप्त हो सकी। १०६७ हि० (१६५७ ई०) में शाहजहां रुग्ण हो गया और दारा शिकोह के छोटे भाइयों शाह शुजा, औरंगज़ेब तथा मुराद बख़्श ने उस पर चढ़ाई कर दी। औरंगज़ेब ने सर्वप्रथम उसे आगरे के समीप सामूगढ़ के युद्ध में रमज़ान १०६८ हि० (जून १६५८ ई०) और फिर अजमेर में जमादी-उस्-सानी १०६९ हि० (मार्च १६५९ ई०) में बुरी तरह पराजित किया। जून १६५९ ई० में वह बोलन दर्रे की ओर जाते हुये बंदी बना लिया गया।

अगस्त में वह बन्दी अवस्था में देहली पहुँचा। २९ अगस्त, १६५९ ई० को उसे एक मैले कुचैले हाथी पर बिठला कर देहली के गली-कूचों में घुमाया गया। वह शुरू से आख़िर तक सिर झुकाये रहा। कहा जाता है कि एक भिखारी ने, जिसे वह सर्वदा दान दिया करता था, उसे आशीर्वाद दिया। दारा शिकोह ने सिर उठाया और जो फटी हुई पगड़ी सिर पर लपेटे था, उतार कर उसकी ओर फेंक दी। बरनियर ने लिखा है कि जो भीड़ दारा शिकोह के दर्शन हेतु एकत्र हो गई थी, वह दारा शिकोह के दुर्भाग्य पर फूट फूट कर रोती थी और हर दिशा से विलाप एवं रोने चिल्लाने की आवाज आती थी। सर्वसाधारण की दारा शिकोह के प्रति सहानुभूति ने औरंगज़ेब को परेशान

---

१. *Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal*, 1917, p. XC.

२. मोटे और चिकने काग़ज़ के घुटे हुये तख़्ते जिस पर लिखने का अभ्यास किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर दिया। रात्रि में दीवाने खास में दरबार हुआ। कुछ अमीरों ने दारा शिकोह की हत्या करा देने का आग्रह किया। आलिमों ने भी फ़तवा दे दिया कि वह काफ़िर और मुलहिद है। ३० अगस्त १६५९ ई० को उसकी हत्या करा दी गई। उसका सिर औरंगज़ेब के पास भेज दिया गया और बाद में शरीर के साथ हुमायूं के मक़बरे में दफ़न कर दिया गया।

दारा शिकोह एवं औरंगज़ेब का युद्ध दो सिद्धान्तों का संघर्ष नहीं। तीमूरी वंश की प्रथानुसार सिंहासन के लिये युद्ध कोई नई बात न थी। दोनों ओर से मुसलमान एवं राजपूत सरदारों ने युद्ध किया। दारा शिकोह ने अपनी अंगूठी पर "प्रभू" शब्द खुदवा रक्खा था किन्तु १३वीं शती ई० में ही चिश्ती सूफ़ियों ने अपने जप में अरबी के स्थान पर हिन्दी शब्दों का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था। दारा शिकोह का सम्भवतः यही अन्त होता चाहे उसने अपनी अंगूठी पर "रब" शब्द ही क्यों न खुदवा लिया होता, किन्तु उसने जो ज्योति जलाई वह भारत वासियों को सर्वदा प्रेरणा देती रहेगी।

२५-११-१९६१ सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मजमउल बहरैन

उसके नाम से जिसका कोई नाम नहीं है,
जिस नाम से भी उसे पुकारो वह उत्तर देता है।

वह अद्वितीय अत्यधिक प्रशंसा का पात्र है जिसने अपने सुन्दर, अनुपम, एवं बे-जोड़ मुख पर कुफ़् तथा इस्लाम की दो जुल्फ़ें आपने सामने के बिन्दु के समान प्रकट की हैं किन्तु उसने इनमें से किसी को भी अपने सुन्दर मुख का आवरण नहीं बनाया है।

पद्य

कुफ़् तथा इस्लाम उसके मार्ग में अग्रसर हैं,
वे कह रहे हैं कि, 'वह एक है और उसका कोई साथी नहीं'।

वह सभी में प्रकट है और सभी उसमें हैं। वही आदि है और वही अनंत। उसके अतिरिक्त कोई उपस्थित नहीं।

रुबाई

पड़ोसी, साथी, साथ चलने वाला सभी कुछ वही है,
फ़क़ीर की गुदड़ी तथा बादशाह के रेशमी वस्त्र में वही है।
पृथकता की सभा एवं संगठन के गुप्त स्थान में,
ईश्वर की शपथ सब कुछ वही है और वस्तुतः सब कुछ वही है।

हज़रत मुहम्मद, उनकी पूज्य संतान एवं उनके प्रतिष्ठित मित्रों पर अत्यधिक दुरुद[1] हों।

फ़क़ीर मुहम्मद दारा शिकोह, जिसे कोई दुःख एवं कष्ट नहीं, सूफ़ियों के सत्य पर आधारित धर्म के तथ्यों के तथ्य एवं रहस्य और गूढ़ सिद्धान्तों की जानकारी प्राप्त कर लेने और इस महान् देन को हासिल कर लेने के उपरान्त, यह प्रयत्न करने लगा कि वह हिन्दुस्तान के एकेश्वरवादियों के मत का ज्ञान प्राप्त कर ले। वह इस धर्म के कुछ गवेषियों तथा पहुँचे हुये लोगों से, जिन्होंने अत्यधिक तपस्या की थी और सूझ-बूझ, बुद्धि एवं तसव्वुफ़ की जानकारी में उच्च स्थान प्राप्त कर लिया था और ईश्वर तक पहुंच चुके थे, मिला और उनसे विचार विमर्श किया। इस फ़क़ीर को शब्दों के भेद के अतिरिक्त ईश्वर के ज्ञान में कहीं भी कोई अन्तर नहीं मिला। इस कारण उसने दोनों धर्मों के सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन किया और ईश्वर के ज्ञान के इच्छुकों को जिन बातों का जानना अनिवार्य एवं लाभदायक है, संकलित करके एक पुस्तक तैयार की। क्योंकि यह ईश्वर का ज्ञान रखने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वाले दोनों धर्मों के अनुयायियों की गूढ़ बातों एवं रहस्यों का संकलन है, अतः इसका नाम मजमउल बहरैन[2] रक्खा। बुज़ुर्गों का कथन है कि "तसव्वुफ़ न्याय है और तसव्वुफ़ (धार्मिक) कर्तव्यों का त्याग है।" अतः जिस किसी में भी न्याय और बुद्धि है वह समझ लेगा कि इन सिद्धान्तों की खोज में कितनी छानबीन की गई है। इसमें संदेह नहीं कि सूझ बूझ रखने वाले बुद्धिमान् इस पुस्तक से अत्यधिक आनन्द प्राप्त करेंगे और दोनों ही धर्मों के नासमझ लोग इससे कोई लाभ न उठा सकेंगे। मैंने अपने इस अनुसन्धान की रचना अपने कश्फ़[3] एवं ज़ौक़[4] के अनुसार अपने घर वालों के लिये की है। मुझे दोनों क़ौमों के साधारण लोगों से कोई मतलब नहीं। ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार[5] का कथन है कि, "यदि मुझे पता चल जाय कि कोई पापी काफ़िर किसी न किसी प्रकार एकेश्वरवाद के भजन गा रहा है तो मैं उसके पास पहुंच कर वह भजन सुनता हूं और उसके प्रति कृतज्ञ होता हूं।"

अनासिर

तत्व

जानना चाहिये कि उन्सुर[6] पांच हैं और ये पांचों तत्व ही मख्लूक़ाते[7] नासूती (सांसारिक उत्पत्ति) के मौलिक अंशों के स्रोत हैं।

---

१. दुआ एवं सलाम।

२. दो समुद्रों का मिलन।

३. आत्म-शक्ति द्वारा गुप्त बातों एवं रहस्यों का ज्ञान।

४. ईश्वर के ज्ञान में रसानुभाव।

५. ख्वाजा नासिरुद्दीन उबैदुल्लाह का, जो ख्वाजा एहरार के नाम से प्रसिद्ध थे, जन्म ८०६ हि० (१४०३-४ ई०) में हुआ। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन-काल समरक़न्द में व्यतीत किया और वहीं २९ रबी-उल-अव्वल ९८५ हि० (१६ जून १५७७ ई०) को मृत्यु को प्राप्त हुये।

६. तत्व।

७. नासूत : सूफ़ियों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य की उस स्वाभाविक स्थिति को नासूत कहते हैं जिसमें मनुष्य साधारणतः आध्यात्मिक यात्रा प्रारम्भ करने के पूर्व रहते हैं। इस्लामी अधिनियमों की, सूफ़ियों के अनुसार, इसी स्थिति में आवश्यकता होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रथम : उन्सुरे[1] आज़म, जिसको शरा[2] वाले अर्श अकबर[3] कहते हैं।

द्वितीय : बाद[4]

तृतीय : आतश[5]

चतुर्थ : आब[6]

पंचम : ख़ाक[7]।

भारतीय भाषा में इन्हें पंचभूत कहा जाता है।

आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी।

आकाश तीन होते हैं :

भूताकाश।

मनाकाश।

चिदाकाश।

इनमें से भूताकाश पंच तत्वों को चारों ओर से घेरे हुए है। मनाकाश समस्त सत्ता को आवृत्त किये हुए है और चिदाकाश वह है जो प्रत्येक वस्तु को घेरे हुए है और प्रत्येक स्थान पर है।

---

१. महत्तत्व।

२. मुहम्मद साहब के बताये हुए नियम एवं इस्लामी सिद्धान्त, इस्लामी शरीअत के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस्लामी नियमों तथा सिद्धान्तों के लिए शरा शब्द का भी प्रयोग होता है। शरा के विद्वानों अथवा मुसलमान आलिमों के लिए 'शरा वाले' अथवा 'अहले शरा' शब्द का प्रयोग हुआ है।

३. महान सिंहासन। क़ुरान में इस शब्द का प्रयोग ईश्वर के सिंहासन के लिए हुआ है, "वह उत्कृष्ट सिंहासन का स्वामी है", क़ुरान सूरा ९,१३१,। क़ुरान के टीकाकार हुसेनी के अनुसार सिंहासन में ८,००० स्तम्भ हैं तथा प्रत्येक स्तम्भ की दूरी ३,०००,-००० मील है। सूफ़ियों के अनुसार ईश्वर के प्रेमी का हृदय ही अर्श अकबर अथवा महान सिंहासन के दर्शन कर सकता है। (कशफ़ुल महजूब)। शेख निज़ामुद्दीन औलिया (मृत्यु १३२५ई०) के अनुसार शेख जलालुद्दीन तब्रेज़ी ने अपने समकालीन बदायूं के क़ाज़ी कमालुद्दीन को चुनौती देते हुए कहा था, "आलिमों की नमाज़ इस प्रकार है कि वे अपनी दृष्टि काबे पर रखते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। यदि काबा दृष्टि के समक्ष न हो तो उस ओर मुख कर लेते हैं। आलिमों का क़िब्ला इसके अतिरिक्त नहीं किन्तु फ़क़ीर जब तक अर्श न देख लें नमाज नहीं पढ़ते। (फ़वायदुल फ़वाद पृ० १४६)। सूफ़ियों के अनुसार ईश्वर अन्तर्यामी है और उसका सिंहासन हृदय है।

४. पवन।

५. अग्नि।

६. जल।

७. धूल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चिदाकाश स्थायी है, नश्वर नहीं। इसके जन्म तथा विनाश के संबन्ध में क़ुरान की किसी 'आयत'[1] तथा वेद में जो कि आसमानी[2] पुस्तक हैं, प्रमाण प्राप्त नहीं है।

चिदाकाश से जो वस्तु सर्व प्रथम उत्पन्न हुई वही 'इश्क़'[3] जिसे भारतीय अद्वैतवादियों की भाषा में 'माया' कहा जाता है।

"मैं गुप्तकोष था परन्तु उसके पश्चात् मुझे प्रकट होने की अभिलाषा हुई, इस लिए मैंने सृष्टि को जीवन प्रदान किया[4]" यह कथन इसका प्रमाण है।

---

१. क़ुरान का वाक्य।

२. दैवी ग्रन्थ।

३. इश्क़ : प्रेम; सूफ़ियों के अनुसार इश्क़ ईश्वर के प्रेम को कहते हैं। अन्य मुसलमान साधारणतः 'हुब' शब्द का प्रयोग करते हैं। क़ुरान में प्रेम के लिए 'वुद', 'हुब', 'मुहब्बत' तथा 'मुवद्दा' शब्दों का प्रयोग हुआ है।

वुद, सूरा १९,९६, हुब, सूरा ५,५९, सूरा २, १६०, सूरा १२-३०, मुहब्बा, सूरा २०-३९, मुवद्दा, सूरा ४-७५ सूरा ५,८५, सूरा २९-२४, सूरा ३०-२०, सूरा २२, सूरा ६०-१, ६०-७ अख़लाक़े जलाली के लेखक के अनुसार प्रेम दो प्रकार का होता है। पाशविक प्रेम तथा आध्यात्मिक प्रेम। उसके अनुसार कामुकता, पाशविक प्रेम का स्रोत है : आध्यात्मिक प्रेम अवगुण नहीं अपितु गुण है। बू अली सेना "इश्क़" नामक पुस्तक में लिखते हैं कि प्रेम ऐसा मनोविकार नहीं जो केवल मनुष्यों ही से संबन्धित हो अपितु यह समस्त वस्तुओं में प्राप्य है। यह आकाश, पृथ्वी, पशुओं, वनस्पति, यहां तक कि खनिज पदार्थों में भी पाया जाता है। इसकी टीका संभव नहीं और टीका के कारण इसका अर्थ और भी अंधकारमय हो जाता है। सैयिद मुर्तजा, ताजुल उरूस। मक़सदुल अक़्सा के लेखक अज़ीज़ इब्न मुहम्मद नसफ़ी के अनुसार, मनुष्य संसार से दिल लगाता है और धन तथा अधिकार के मोह में फंस जाता है यहां तक कि ईश्वर की कृपा से उसका हृदय ईश्वर की ओर आकृष्ट होने लगता है। सूफ़ी सभी संबन्धों को त्यागकर ईश्वर के अतिरिक्त हर चीज को भूल जाता है। यह संबन्ध इश्क़ है। सूफ़ियों की आध्यात्मिक यात्रा में ईश्वर के ज्ञान के लिए सर्व प्रथम उसे ईश्वर की उपासना करने का आदेश दिया जाता है। इसे उबूदियत अथवा सेवा या अधीनता कहते हैं। जब उपासना के कारण दैवी कृपा से उसमें ईश्वर का प्रेम उत्पन्न हो जाता है तो "इश्क़" की श्रेणी प्रारम्भ हो जाती है।

४. 'कुन्तो कन्ज़न मख़फ़ियन फ़ अहबबतु अन ओरफ़ फ़ ख़लक़्तुल ख़ल्क़'।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इश्क़ से रूहे आज़म[1] अर्थात् जीवात्मा का आविर्भाव हुआ जिसे हक़ीक़ते मुहम्मदी[2] कहते हैं, पूर्णात्मा से अभिप्राय मुहम्मद साहब हैं। (उस आत्मा को शान्ति और सम्मान मिलें) भारतीय अद्वैतवादी उसको हिरण्य गर्भ[3] कहते हैं या अवस्थात्मा[4] कहते हैं जो कि उसकी महानता को प्रदर्शित करते हैं।

---

१. रूह का अर्थ आत्मा है। किताबुत्तारिफ़त के अनुसार रूह तीन प्रकार की होती है। (१) रूहुल इनसानी। (२) रूहुल हैवानी। (३) रूहुल आज़म। रूहुल इन्सानी का तात्पर्य मनुष्य की चिन्तन शक्ति से है जो मनुष्य को पशु से पृथक् करती है और जो मनुष्य को ईश्वर की ओर से प्राप्त होती है। यही जीव शरीर में प्रविष्ट हो जाता है और कभी पृथक्, उदाहरणार्थ निद्रा अथवा मृत्यु की अवस्था में।

रूहे हैवानी का तात्पर्य जीव से है, इसका स्थान हृदय है और जो शिरा में स्पन्दन के साथ भ्रमण करता है।

रूहुल आज़म (उत्कृष्ट आत्मा): वह आत्मा जिसका संबन्ध ईश्वर की उपस्थिति से है और जिसका ज्ञान परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य को नहीं।

२. मुहम्मद साहब के स्वत्व का आदि रूप अथवा नूरे मुहम्मदिया या मुहम्मद साहब का प्रकाश जो कि मुसलमानों के मतानुसार समस्त वस्तुओं के पूर्व उत्पन्न हुई। सूफ़ियों के यहां इस विश्वास को बड़ा महत्व प्राप्त है। इमाम क़स्तलानी के अनुसार जाबिर इब्न अब्दुल्लाह अनसारी का कथन है कि मुहम्मद साहब ने उन्हें बताया कि, सर्व प्रथम जो वस्तु उत्पन्न हुई वह तुम्हारे रसूल का प्रकाश था जो कि दैवी प्रकाश से उत्पन्न किया गया। मेरा यह प्रकाश जहाँ ईश्वर की इच्छा होती वहां घूमा करता था और जब ईश्वर ने संसार को उत्पन्न करना निश्चय किया तो उसने मुहम्मद के इस प्रकाश को चार भागों में विभाजित किया; प्रथम भाग से उसने क़लम (लेखनी) को जन्म दिया, दूसरे से लौह (तख़्ती) तीसरे से सर्वोच्च आकाश अथवा अर्श, चौथे भाग को चार टुकड़ों में विभाजित किया गया। प्रथम में हमलतुल अर्श अथवा ८ फ़िरिश्ते जो अर्श को थामे हुए हैं, द्वितीय से कुर्सी (ईश्वर का न्यून सिंहासन)। तृतीय से फ़िरिश्ते और चतुर्थ के चार अन्य टुकड़े किये गये। १. सातो आकाश। २. २. पृथ्वी। ३ सात स्वर्ग तथा नरक और चौथे के फिर चार टुकड़े किये गये। १. नेत्रों का प्रकाश २. मस्तिष्क का प्रकाश। ३. ईश्वर के ऐक्य के प्रेम का प्रकाश ४. शेष सृष्टि (मुवाहिबं लदुनिया, भाग १, पृ० १२)।

३. मूल में 'हरन गर्भ'।

४. अवस्थात आत्मा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसके पश्चात् उन्सुरे बाद[1] आता है जिसे नफ़सुर्रहमान[2] कहा जाता है। उस उच्छ्-वास से बाद[3] का जन्म हुआ।

पूजनीय परमेश्वर के अन्तर में बन्द रहने से श्वांस के समय यह वायु उष्ण निकली, वायु से अग्नि निकली, दया एवं ऐक्य के गुणों से युक्त वही उच्छ्वास शीतल हो गया तो अग्नि से जल उत्पन्न हुआ।

अग्नि तत्त्व और वायु तत्त्व अपनी महान् पवित्रता के कारण दृष्टिगोचर या ग्राह्य नहीं होते, इन दोनों की अपेक्षा जल तत्त्व अधिक ग्राह्य है। इस कारण कुछ विद्वानों का मत है कि जल तत्त्व सर्वप्रथम उत्पन्न किया गया तत्पश्चात् पृथ्वी तत्व उत्पन्न हुआ। पृथ्वी की उपमा जल के फेन से दी आती है जो दुग्ध की समानता करता है और जब अग्नि पर रक्खा जाता है तब उबलता है और फेन देता है।

शेर

मुझे इस बात का किंचित्मात्र भी ज्ञान नहीं था कि यह
समुद्र इतना अगाध एवं असीम है।
इसका वाष्प आकाश रूप में तथा फेन पृथ्वी रूप में परिवर्तित होगा।

शेर

एक अण्डाकार बूंद वृहत् होकर समुद्र हो गई,
जिसके फेन से पृथ्वी तथा धूम्र से आकाश का प्रादुर्भाव हुआ।

इसके विपरीत क़यामते कुबरा[4] के दिन, जिसको भारतीयों की भाषा में महा प्रलय कहा जाता है, पृथ्वी सर्व प्रथम जल के द्वारा निगलने की क्रिया से नष्ट कर दी जायगी,

---

१. वायु तत्व।
२. दयापूर्ण परमेश्वर का उच्छ्वास।
३. वायु।
४. क़यामत मुसलमानों का मुख्य विश्वास है। क़ुरान में इसके लिए, "यौमुल क़यामह": (खड़े होन का दिन), "यौमुल फ़स्ल" (पृथक् होने का दिन) "यौमुल हिसाब" (हिसाब किताब का दिन) "यौमुल बास", (जागरण का दिन), "यौमुल दीन (निर्णय का दिन) "यौमुल मुहीत" (घेरने का दिन) तथा असूसा अहर (घड़ी) शब्दों का प्रयोग हुआ है। क़ुरान में विभिन्न स्थानों पर इस दिन का बड़ा विशद उल्लेख है। क़यामत के आने की सूचना के विषय में भी इस्लामी हदीसों में बड़े विस्तार से लिखा हुआ है किन्तु फिर भी इसका कोई समय निश्चय नहीं किया गया है। कहा जाता है कि सर्व प्रथम एक नरसिंहा तीन बार फूंका जायेगा। प्रथम नाद में समस्त पृथ्वी तथा आकाश के प्राणी भयभीत हो जायेंगे। जिन लोगों को ईश्वर इसके प्रभाव से सुरक्षित रखना चाहता है केवल उन पर कोई प्रभाव न होगा। इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अग्नि से जल शुष्क कर दिया जायेगा, अग्नि वायु द्वारा बुझा दी जायगी और वायु रूहे आज़म (महान् आत्मा) के साथ साथ महाकाश में मिल जायगी[1]।

"उसके मुख के (उसके) अतिरिक्त समस्त वस्तुएँ नश्वर[2] हैं।"

नाद द्वारा पृथ्वी हिल जायगी। भवन ही नहीं अपितु पर्वत भी धराशायी हो जायेंगे, आकाश पिघल जायेगा, सूर्य पर अंधकार छा जायेगा, फ़िरिश्तों की मृत्यु के कारण सितारे गिर पड़ेंगे, समुद्र सूख जायेगा अथवा अग्नि की लपटों में परिवर्तित हो जायेगा, सूर्य, चन्द्रमा तथा सितारे उसमें गिर पड़ेंगे, दूध पिलाने वाली मातायें शिशुओं को दूध पिलाना बन्द कर देंगी। समस्त पशु अपना भयंकर अथवा नम्र रूप त्याग कर एक स्थान पर एकत्र हो जायेंगे।

तदुपरान्त दूसरा नाद होगा जो कि परीक्षा का नाद होगा। उस समय पृथ्वी तथा आकाश के समस्त प्राणी मर जायेंगे अथवा नष्ट कर दिये जायेंगे। केवल वही लोग जिन्हें ईश्वर बचाना चाहता है सुरक्षित रह सकेंगे। यह सब कुछ पलक झपकाते हो जायेगा। केवल ईश्वर, स्वर्ग, नरक तथा इन दोनों स्थानों के निवासी शेष रह जायेंगे। मौत के फ़िरिश्ते की मृत्यु सबके बाद में होगी।

इसके ४० वर्ष उपरान्त मृत्यु से उठने का सिंहनाद होगा और नरसिंहा तीसरी बार बजेगा। इसे इसराफ़ील फ़िरिश्ता बजायेगा। इसराफ़ील, जिबरील तथा मीकाईल नामक फ़िरिश्तों को पूर्व ही से जीवित कर दिया जायेगा। इस नाद पर सभी वस्तुय पुनः जीवित हो उठेंगी और सर्व प्रथम मुहम्मद साहब जीवित होंगे। क़यामत के दिन की लम्बाई क़ुरान में एक स्थान पर एक हज़ार वर्ष और एक स्थान पर ५०,००० वर्ष बताई गई है। क़ुरान के टीकाकारों के अनुसार इस अवधि से तात्पर्य बड़े दीर्घ काल से है। इस दिन जो लोग अनन्त आनन्द के भागी होने वाले होंगे वे बड़े सम्मान तथा धैर्य धारण किये हुए उठेंगे और जो अपमान के भागी होने वाले होंगे उनकी बड़ी ही दुर्दशा होगी। सबको अपने अपने कर्म तथा वचन आदि का उत्तर देना होगा। केवल मनुष्य ही नहीं अपितु पशुओं तथा जिन्नातों इत्यादि को भी उत्तर देना पड़ेगा। हिसाब किताब के समय प्रत्येक मनुष्य को एक ग्रंथ दिया जायेगा जिसमें उसके पूरे जीवन काल के कर्म तथा वचन का उल्लेख होगा। सभी के कर्म तथा वचन इत्यादि न्याय की तराज़ू पर तौले जायेंगे। निर्णय के समाप्त हो जाने के उपरान्त जो लोग स्वर्ग में जाने वाले होंगे वे दायें हाथ की ओर और जो नरक में जाने वाले होंगे वे बायें हाथ की ओर जायेंगे। किन्तु दोनों ही को सिरात नामक पुल पार करना पड़ेगा जो बाल से अधिक बारीक और तलवार की धार से अधिक तेज़ नरक के मध्य में स्थित बताया जाता है।

१. सभी वस्तुएँ नष्ट होकर ईश्वर से मिल जायेंगी।

२. 'कुल्लो शैइन हालिकु इल्ला वजहहू' (क़ुरान २८ : ८८)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"प्रत्येक वस्तु नश्वर है, केवल परम वैभवशाली परमेश्वर ही जो महाकाश है चिरस्थायी रहेगा।"

सभी वस्तुयें नश्वर हैं केवल उसका मुख (वह) जो कि बड़े वैभव तथा सम्मान वाला[1] है।

उपर्युक्त दोनों आयतों[2] में केवल परमेश्वर के मुख को पृथक् किया गया स्वरूप है जिसका तात्पर्य महाकाश से है जो कि नश्वर नहीं है। यदि ऐसा न होता तो उसने कहा होता कि उसके अतिरिक्त समस्त पदार्थ नश्वर हैं[3]।

परमेश्वर के मुख का वर्णन केवल महाकाश के लिए किया गया है जो कि परमेश्वर के उत्तम शरीर के समान है।

भारतीय भाषा में पृथ्वी को दिवि[4] कहा जाता है जिसके द्वारा समस्त पदार्थ उत्पन्न होते हैं तथा अन्त में उसी में मिल जाते हैं, जैसा कि इस पवित्र आयत में कहा गया है :—

"इससे हमने तुमको उत्पन्न किया और इसी में हम तुम्हें प्रत्यावर्तित करेंगे और इसी से तुम्हें पुनः उत्पन्न करेंगे"[5]।

२—हवास (इन्द्रिय)

इन पंच तत्वों के अनुरूप पांच हवास हैं जिनको भारतीय भाषा में पंचेन्द्रिय कहते हैं। वे शाम्मा,[6] ज़ायेक़ा[7], वासेरा,[8] सामेआ,[9] लामेसा[10] हैं जिनको भारतीय भाषा में घ्राण, रसना, चक्षु, श्रोत्र और त्वक् कहते हैं और इनके द्वारा अनुभूत गुणों को गन्ध, रस, रूप, शब्द तथा स्पर्श कहते हैं। इन पांचो इन्द्रियों में से प्रत्येक, तत्वों में से किसी एक की जाति से होता है और उससे उसका संबन्ध होता है।

---

१. 'कुल्लो मन अलैहा फ़ानिव व यबक़ा वजहो रब्बोका ज़ुल् जलाले कल् इकराम'। (क़ुरान ५५: २६)।
२. क़ुरान के वाक्यों।
३. 'कुल्लु शैइन हालिक इल्ला हुवा'।
४. मूल में 'देवी'।
५. 'मिन्हा खलक़नाकुम व फ़ीहा नोईदोकुम व मिन्हा नुखरेजुकुम तारतन उखरा'।
६. घ्राणेन्द्रिय।
७. रसनेन्द्रिय।
८. नेत्रेन्द्रिय।
९. श्रवणेन्द्रिय।
१०. त्वगिन्द्रिय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस प्रकार घ्राणेन्द्रिय धूलि (पृथ्वी) से संबन्धित है, कारण कि धूलि को छोड़कर कोई भी तत्त्व गंध धारण नहीं करता जिसका अनुभव केवल शाम्मा (घ्राणेन्द्रिय) के द्वारा किया जाता है। ज़ायक़ा (रसनेन्द्रिय) जल से संबन्धित है क्योंकि जल का स्वाद हमारी जिह्वा से ग्रहण किया जाता है।

बासेरा (नेत्रेन्द्रिय) अग्नि से संबन्धित है क्योंकि केवल नेत्रों के द्वारा ही वर्ण ग्रहण किया जाता है जब कि चमक दोनों में विद्यमान है।

लामेसा (त्वगिन्द्रिय) वायु से संबन्धित है क्योंकि स्पर्शनीय वस्तुओं का अनुभव वायु के द्वारा होता है।

सामेआ (श्रवणेन्द्रिय) उन्सुरे आज़म (महतत्व) से, जो महाकाश होता है, हम ध्वनि श्रवण करते हैं और यह श्रवणेन्द्रिय के द्वारा ही संभव है।

महाकाश का वास्तविक तत्व केवल अहले दिल[1] को ज्ञात होता है और किसी अन्य व्यक्ति को इसका ज्ञान नहीं। यह अभ्यास सूफ़ियों और भारतीय अद्वैतवादियों को समान होता है। सूफ़ी इसे शग़्ले-पासे-अन्फ़ास[2] कहते हैं और भारतीय इसे अपने वाग्व्यवहार में ध्यान[3] कहते हैं।

आन्तरिक इन्द्रियों की भी संख्या पांच ही है। मुश्तरक[4], मुतख़य्येला[5], मुतफ़क्केरा,[6] हाफ़ेज़ा[7] और वाहेमा[8], परन्तु भारतीय क्रम में ये चार हैं: बुद्धि, मन, अहंकार, चित्त जिनका एकीकारण अन्तःकरण कहलाता है और इसको हम पंचम के समान कह सकते हैं।

चित्त का एक विशेष गुण है जिसे सत्प्रकृति कहते हैं और यह गुण इसके पांव के समान है। यदि यह काट दिया जाय तो चित्त, दौड़न से रोका जा सकता है।

प्रथम : बुद्धि अर्थात् ज्ञान शक्ति, श्रेष्ठ कर्म की ओर प्रेरित करने और घृणित कार्य से रोकने का विशिष्ट गुण रखती है।

द्वितीय : मन या मस्तिष्क, संकल्प अर्थात् निश्चय, विकल्प अर्थात् संदेह, के दो विशिष्ट गुण रखता है।

---

१. सूफ़ियों।
२. श्वांस को अपने वश में करने का अभ्यास।
३. मूल पुस्तक में 'धुन' है।
४. दो अथवा दो से अधिक इन्द्रियों से संबन्धित।
५. काल्पनिक।
६. चिन्तनशील।
७. धारणा अथवा स्मृति संबन्धी।
८. उद्भावना संबन्धी।

SPS
891.431 M 20 CH

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तृतीय : चित्त मस्तिष्क का संदेशवाहक है जिसका कार्य सब ओर दौड़ना है और श्रेष्ठ कर्म तथा घृणित कर्म के पहचानने की शक्ति से रहित है।

चतुर्थ : अहंकार, जो कि समस्त वस्तुओं का संबन्ध अपने से लगाता है और परमात्मा के गुणों में से एक गुण है, माया के कारण जो उनके वाग्व्यवहार में इश्क़ कहा जाता है।

अहंकार भी तीन श्रेणियों में पुनः विभक्त किया जाता है :—

सत्व, राजस्, तामस्।

प्रथम : सत्व अहंकार या ज्ञान स्वरूप पूर्णावस्था है जब परमात्मा कहता है, "संसार में जो कुछ है, मैं हूँ"। ऐसी अवस्था प्रत्येक वस्तु को पूर्णावृत्त करने की अवस्था है। "अब निश्चित ही वह प्रत्येक वस्तु को आवृत्त करता है[1]", दूसरी भी पवित्र आयत कहती है: "वही प्रथम वही अंतिम और वही सर्व प्रधान और गुप्त वस्तुओं का ज्ञाता है"[2]।

द्वितीय : अहंकार राजस है जो मध्यम अर्थात् बीच की अवस्था का है, जब कि भक्त जीवात्मा के ऊपर अपने नेत्रों को निश्चित रूप से लगाकर कहता है, "मेरी आत्मा शरीर और तत्वों की सीमाओं से रहित है और शारीरिक रूप मेरे प्रवेश का साधन नहीं है," "उसकी उपमा (समानता) के समान कुछ नहीं है"[3] और संसार की आवश्यकताओं से परे ईश्वर निश्चय ही स्वयं पूर्ण है"[4]।

तृतीय : अहंकार तामस् अधम है, या अविद्या की निम्न अवस्था है, अर्थात् अति महान् आत्मा का दासत्व है और यह हीनता इस सत्य के आधार पर होती है कि एक व्यक्ति अपने मानभंगिमा, परिमितता, आत्मीयता के कारण अपने से अज्ञानता, अज्ञता, ध्यान-हीनता, को संबन्धित करता है। ऐन्द्रिक जीवन पर अपनी दृष्टि रखता है इस ढंग से बोलता है कि उसके परिणाम-स्वरूप, "मन व तू"[5] अपने ऐक्य की श्रेणी से पृथक् हो जाते हैं।

कहा "हे मुहम्मद! कि मैं तुम्हारे समान मनुष्य होने के अतिरिक्त कुछ नहीं हूँ"[6]। फलस्वरूप वसिष्ठ[7] कहते हैं कि जब हज़रते वुजूद[8] ने निश्चित होने की इच्छा

---

१. 'अला इन्नहू बे कुल्ले शैइम् मुहीतुन' (क़ुरान ४१:५४)।
२. 'हौवल् अव्वलो वल आख़िरो वल ज़ाहिरो वल बातिनो' (क़ुरान ५७:३)।
३. 'लैस क मिस्लेही शैअन' (क़ुरान ३:९६)।
४. 'फ़ इन्नल्लाह ग़नीयुन अनिल आलमीन' (क़ुरान १८:११)।
५. मैं और तू।
६. 'कुल इन्नमा अना बशरुम् मिस्लोकुम' (क़ुरान १८:११)।
७. मूल पुस्तक में 'वशिश्त'।
८. वुजूद का अर्थ, सार, तत्व अथवा अस्तित्व है। मुसलमानों के अनुसार वुजूद तीन प्रकार का होता है। वाजिबुल वुजूद "अनिवार्य अस्तित्व" अर्थात् परमेश्वर, मुमकिनुल वुजूद "सम्भव अस्तित्व" अर्थात् 'मनुष्य, "मुमतनेउल वुजूद "असम्भव अस्तित्व" अर्थात् ईश्वर का साक्षी होना। हज़रते वुजूद का तात्पर्य परमेश्वर से है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की तो वह इस संकल्प मात्र परमात्मा में परिवर्तित हो गया और इस निश्चय की वृद्धि से अहंकार की अवस्था प्राप्त हो गई और जब अन्य निश्चित होने की (अवस्था) में वृद्धि हो गई तो इसको महतत्व या अक्ले कुल का नाम प्राप्त हो गया।

मन अर्थात् मस्तिष्क की, जिसको प्रकृति भी कहा जाता है, संकल्प एवं महतत्त्व से उत्पत्ति हुई और मन संकल्प से पांच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् घ्राण, त्वक्, नेत्र, श्रोत्र, रसना की उत्पत्ति हुई। पांच ज्ञानेन्द्रिय और संकल्प के संयुक्त होने से शरीर और अवयव उत्पन्न हुए जो कि अपनी संयुक्ताकृति से बदन[1] कहे जाते हैं। इसलिए परमात्मा ने जिसको 'अबुल अरवाह' कहते हैं, (जिसका प्रथम प्रादुर्भाव मुहम्मद साहब की हक़ीक़त[2] तथा द्वितीय प्रादुर्भाव रुहुल क़ुदुस, जो जिबरील[3] अमीन[4] हैं, के हैं) अपनी इच्छानुसार अपने ऊपर की समस्त सीमाओं को दृढ़ किया है और स्वयं को उनसे बांधा है, जिस प्रकार रेशम का कीड़ा रेशम के धागों को अपनी ही लसिका से निकाल कर अपने आपको उनमें जकड़ लेता है, उसी प्रकार हज़रते वाजिबुल वुजूद ने इन काल्पनिक बंधनों को अपने लिए स्वयं बनाया है और अपने आपको उस वृक्ष के बीज के समान उसमें प्रविष्ट कर दिया है जो स्वयं वृक्ष को जन्म देता है और स्वयं वृक्ष में प्रविष्ट हो जाता है और डालियों, पत्तों तथा फूलों के बंधन में बंधा रहता है। अतः तुम्हें जानना चाहिये तथा समझ लेना चाहिये कि प्रादुर्भाव के पूर्व यह संसार ज़ात[5] में निहित था और इस समय उसकी पवित्र सत्ता संसार में छिपी हुई है।

३—शग़्ल (भक्ति)

यद्यपि भारतीय अद्वैतवादियों के मतानुसार शग़्ल (भक्ति) के अनेकों साधन हैं तथापि वे 'अजपा' को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। प्रत्येक चेतन प्राणी में सुप्तावस्था एवम् जागृतावस्था में बिना इच्छा एवम् निग्रह के यह अभ्यास प्रतिक्षण अक्षुण्ण रहता है। इसके परिणाम स्वरूप यह पवित्र आयत है:

"कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो उसकी महत्ता स्वीकार न करती हो तथा उसकी

---

१. शरीर।

२. हक़ीक़ते मुहम्मदी : हज़रत मुहम्मद के अस्तित्व का रहस्य।

३. दविक संदेश लाने वाला फ़िरिश्ता।

४. अमीन : भरोसे के योग्य। जिबरील को, इस कारण कि वे मुहम्मद साहब को ईश्वर का संदेश पहुँचाते थे और भरोसे के योग्य थे, अतः जिबरील अमीन कहा जाता है।

५. मुग़रब नामक शब्द कोष में ज़ात को किसी वस्तु का सार बताया गया है। इसका प्रयोग ईश्वर की सत्ता के लिए किया जाता है।

६. 'व इन्न मिन शैइन इल्ला युसब्बेहो बे हम्देही व ला किन्ला तफ़क़हून तसबीहहुम'। (क़ुरान १७:४४)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रशंसा न कर रही हो, किन्तु तुम उसकी इस अनजाने में की गई आराधना को नहीं जानते"[1], "इस सत्य का प्रतिपादन कर रही है।"

भीतर आने वाले श्वास तथा बाहर जाने वाले निःश्वास की दो शब्दों द्वारा व्याख्या की गई है। जो श्वास बाहर निकलता है उसे "ऊ"[1] कहते हैं और जो श्वास भीतर जाता है उसे "मन"[2] कहते हैं। । और उनका मिश्रण ऊ मनम[3] हो जाता है। सूफ़ी संत इन शब्दों का निरूपण दो शब्दों हुवल्लाह[4] में समझते हैं। अब श्वास भीतर को आती है वो हुवा[5] का प्रादुर्भाव तथा बाहर जाने के समय "अल्लाह" का स्वतः उच्चारण होना है।

ये शब्द उच्चरित होते रहते हैं जिसका उसे अनुभव नहीं होता।

---

१. वह।
२. मैं।
३. वह मैं हूं।
४. वह परमेश्वर है।
५. वह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

II

सिफ़ते अल्लाह तआला (सर्वोच्च ईश्वर के गुण)

सूफ़ियों के मतानुसार जमाल[1] एवं जलाल[2] दो ईश्वरीय गुण हैं। समस्त सृष्टि इन दो गुणों के बाहर नहीं है। भारतीय संतों के अनुसार परमेश्वर के तीन गुण हैं जिन्हें सामूहिक रूप से त्रिगुण अथवा सत, रज, तम कहते हैं जिनका अर्थ सत् (ईजाद)[3] रज् (अबक़ा)[4] तथा तम (अफ़ना)[5] है।

सूफ़ी संत अबक़ा को जमाल का गुण मानते हैं किन्तु इन तीनों गुणों के परस्पर संबन्धित होने के कारण भारतीय संतों ने उनका नाम त्रिमूर्ति अथवा ब्रह्मा, विष्णु, महेश रखा है जो कि सूफ़ियों के अनुसार जिबरील[6], मीक़ाईल[7], इसराफ़ील[8] के समानार्थी हैं। ब्रह्मा सृष्टि कर्त्ता[9] है जिसे जिबरील कह सकते हैं, विष्णु पालन कर्त्ता[10] है जिसे मीक़ाईल तथा महेश संहार का देवता[11] जिसे इसराफ़ील कह सकते हैं।

जल, पवन, अग्नि इन्हीं देवताओं से इस प्रकार संबन्धित हैं: जल जिबरील से, अग्नि मीक़ाईल से, तथा वायु इसराफ़ील से। इस प्रकार ये तीनों तत्व अर्थात् जल, पवन, अग्नि प्रत्येक चेतन में विद्यमान हैं।

इस प्रकार जल तत्व वाला ब्रह्मा जिह्वा रस में प्रकट होकर वाक्शक्ति का कारण स्वरूप है। विष्णु अग्नि रूप में नेत्रों में विद्यमान होकर प्रकाश और दृष्टि का अधिष्ठाता है। महेश, पवन रूप में नासिका में श्वासोच्छ्वास का साधन है जिसके समाप्त हो जाने से मृत्यु हो जाती है।

त्रिगुण, जो कि तीनों दैवी गुणों (ईजाद, अबक़ा तथा अफ़ना)[12] का समन्वय है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा प्रकट होता है। उनके गुण संसार के प्रत्येक प्राणी में प्रकट होते

---

१. सौन्दर्य।
२. तेज।
३. सृजन।
४. पालन।
५. विनाश।
६. दैविक संदेश लाने वाला फ़िरिश्ता।
७. इसराईलियों का आश्रयदाता।
८. वह फ़िरिश्ता जो क़यामत में दुन्दभी बजायेगा।
९. मोअक्किले ईजाद।
१०. मोअक्किले अबक़ा।
११. मोअक्किले अफ़ना।
१२. सृजन, पालन तथा संहार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हैं। इस प्रकार एक प्राणी जन्म लेता है तब वह एक निश्चित काल तक जीवित रहता है और उसके पश्चात् उसका विनाश हो जाता है।

इन तीनों गुणों की सामूहिक शक्ति को त्रिदेवी कहते हैं। त्रिमूर्ति ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश का सृजन किया जब कि त्रिदेवी सरस्वती, पार्वती तथा लक्ष्मी की जननी हैं। सरस्वती का संबन्ध रजोगुण और ब्रह्मा से, पार्वती का संबन्ध तमोगुण और महेश तथा लक्ष्मी का संबन्ध सतोगुण और विष्णु से है।

रूह (आत्मा)

रूह दो प्रकार की होती है। एक रूह[१] तथा द्वितीय अबुल अरवाह[२] जिन्हें भारतीय संतों की भाषा में आत्मा और परमात्मा कहते हैं। जबकि जाते बहत[३] शुद्धता अथवा अशुद्धता से संबन्धित होकर निर्धारण अथवा बंधन में पड़ जाता है तो उसे शुद्धता में अकेला होने के कारण रूह अथवा आत्मा कहते हैं और अशुद्धता से संबन्धित होने के कारण उसे जसद अथवा शरीर कहते हैं। ज़ात[४] जो अज़ल[५] से निर्धारित हो गई वह रूहे आज़म[६] है जो ज़ात मजमउम् सिफ़ात[७] के समकक्ष है। वह ज़ात जिसमें समस्त आत्माएँ सम्मिलित हैं उसे परमात्मा अथवा अबुल अरवाह कहते हैं।

जो संबन्ध जल तथा उसकी लहरों में है वही संबन्ध बदन व रूह अर्थात् शरीर तथा आत्मा में है। लहरों का पूर्ण रूपेण सामंजस्य अबुल अरवाह अथवा परमात्मा कहलाता है और केवल जल शुद्ध और चैतन्य परमात्मा का स्वरूप है।

वाद (वायु)

मानव शरीर के अन्तर्गत वायु पांच स्थानों में भ्रमण करती है इसलिए वायु के पांच नाम हैं :

१. प्राण
२. अपान
३. समान
४. उदान
५. व्यान

---

१. साधारण: आत्मा।
२. आत्माओं की आत्मा।
३. पवित्र ज़ात (सत्व)।
४. सत्व।
५. आदिकाल।
६. महान् आत्मा।
७. सर्वगुणणीय सत्व।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्राण वायु : जो कि नासिका छिद्र से पांव के अंगूठे तक व्यापक है और श्वास क्रिया इसका विशेष गुण है।

अपान वायु : जिसका संचालन नितम्ब भाग से लेकर मुख्येन्द्रिय तक है और जो कि नाभि को आवृत्त किये हुए है तथा जीवन का कारण है।

समान वायु : अन्तःकरण तथा नाभि के भीतर भ्रमण करता रहता है।

उदान वायु : कण्ठ से लेकर मस्तिष्क के अग्र भाग तक कार्य करता है।

व्यान वायु : वह वायु है जो कि प्रत्येक वस्तु में प्रवेश करती है चाहे वह वस्तु प्रत्यक्ष हो अथवा परोक्ष।

अवालमे अरबेआ[१] (चार जगत)

जगत, जिनमें समस्त प्राणी मात्र को अवश्य ही भ्रमण करना पड़ता है, कुछ सूफ़ियों के अनुसार चार हैं :

१. नासूत[२]
२. मलकूत[३]
३. जबरूत[४]
४. लाहूत[५]

लेकिन अन्य विचारों के अनुसार आलमे मिसाल[६] को मिला देने से ये पांच हैं और वे जो कि आलमे मिसाल को आलमे मलकूत से अभिन्न समझते हैं केवल चार जगतों को ही स्वीकार करते हैं।

हिन्दुस्तान के संतों के मतानुसार अवस्थात्मन् शब्द जो कि इन चार जगतों के लिए प्रयुक्त होता है केवल चार हैं :

१. जाग्रत
२. स्वप्न

---

१. अवालिमे अरबेआ : चार जगत।
२: मानव की स्वाभाविक स्थिति नासूत है। इस स्थिति में मनुष्य को शरीअत का अनिवार्य रूप से पालन करना पड़ता है और इस्लाम के समस्त आदेशों का पालन करना पड़ता है। (मानवीय जगत)।
३. यह फ़िरिश्तों की स्थिति के अनुरूप है और तरीक़त के मार्ग से इस जगत की यात्रा होती है। अदृश्य जगत (देव लोक)।
४. यह शक्ति की स्थिति है। ईश्वर के ज्ञान (मारेफ़त) के मार्ग से इस जगत की यात्रा होती है। (सर्वोच्च जगत)।
५. लोप अथवा ईश्वर में लीन होने की स्थिति। सूफ़ियों की आध्यात्मिक यात्रा में यह अंतिम स्थिति है। दैवी जगत।
६. सादृश्य जगत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३. सुषुप्ति
४. तुर्य

१. जाग्रत जगत : नासूत के समान है जो कि प्रकाशन और जागरण का जगत है।
२. स्वपन : जो कि मलकूत के सदृश्य है, आत्मा और स्वप्नों का संसार है।
३. सुषुप्ति : जो कि जबरूत के समान है तथा जिसमें दोनों लोकों के चिन्ह अदृश्य हो जाते हैं और मन व तू[1] का भेद लुप्त हो जाता है इसे अपने नेत्रों को खोल कर देखा जाय चाहे बन्द करके।

दोनों जातियों के बहुत से संत हैं जिनको इस संसार के विषय में कोई भी ज्ञान प्राप्त नहीं है। इसी लिए सैयिदुत्ताइफ़ा, उस्ताद अबुल क़ासिम, जुनैद बग़दादी[2] ने (जिसकी आत्मा को पवित्रता में विश्राम प्राप्त हो) सूचना दी है और कहा है "बिना किसी अनुचर के एक क्षण का बैठना तसव्वुफ़ कहा जाता है।" शेख़ुल इस्लाम[3] ने पूछा, "बिना किसी अनुचर से आपका क्या तात्पर्य है।" उन्होंने उत्तर दिया, "इसका तात्पर्य है बिना खोजे प्राप्त करना और बिना देखे दर्शन करना, क्योंकि नेत्र दर्शन की अवस्था के लिए रोक के समान हैं। इसलिए "बिना अनुचर के बैठने का तात्पर्य यह है कि आलमे नासूत और आलमे मलकूत के चिन्हों का दृष्टा के मस्तिष्क में प्रवेश न करना" और मौलाना रूम[4] ने भी इसी विचार का समर्थन किया है।

पद्य

"यदि तेरी उसे प्राप्त करने की इच्छा है तो एक क्षण के लिए उसे मत खोज,
और यदि तू उसे जानना चाहता है तो एक क्षण के लिए उसे मत जान,
जब तू उसे गुप्त रूप से खोजता है तब तू उसके प्रकाश से बहुत दूर है,
जब तू प्रत्यक्ष रूप से उसे ढूंढ़ता है तो तू उसके रहस्य से छिपा हुआ है, जब तू अदृश्य और प्रकट से बाहर आता है तब
निःसंदेह अपने पांव फैला और आराम से उसकी सुरक्षा में शयन कर।"

---

१. मैं और तू।
२. अबुल क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अल जुनैद अल ख़राज अल ख्वारीरी, बग़दाद के प्रसिद्ध सूफ़ी थे। उनकी मृत्यु २९७ हि० (९१० ई०) में बग़दाद में हुई। दारा शिकोह इस कथन को बड़ा महत्व देता था और उसने अपनी तीनों कृतियों रिसालेये हक़ नुमा, हसनातुल आरेफ़ीन तथा सकीनतुल औलिया—में इसका उल्लेख किया है।
३. शेख़ुल इस्लाम अबू इस्माईल अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अल अनसारी अल हरवी का जन्म २ शाबान ३९६ हि० (१००६ ई०) में हुआ। वे तसव्वुफ़ संबन्धी कई ग्रंथों के लेखक हैं किन्तु उनकी मुनाजात अथवा प्रार्थना को बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। उनकी मृत्यु ४८१ हि० (१०८८ ई०) में हुई।
४. मौलाना रूम : प्रसिद्ध सूफ़ी कवि जलालुद्दीन रूमी मसनवी के रचियता, मृत्यु १२७३ ई०।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

४. तुर्य जगत : लाहूत के अनुरूप है जो पवित्र सत्व कहलाता है और जो कि समस्त संसारों को आवृत्त किये हुए है।

यदि एक व्यक्ति नासूत से मलकूत पर्यन्त यात्रा करता है और मलकूत से जबरूत तक, तथा जबरूत से लाहूत तक यात्रा करता है तो यह उसके पक्ष में उन्नति समझी जायगी। लेकिन यदि सत्यों का सत्य, जिसको हिन्दुस्तान के अद्वैतवादी अवसान कहते हैं, लाहूत की अवस्था से जबरूत और तब मलकूत की तरफ़ नीचे आता है, उसकी यात्रा नासूत पर समाप्त हो जाती है।

वह सत्य जो कि कुछ सूफ़ियों ने चार संसारों के अवरोहों के विषय में वर्णन किया है, जब कि अन्य पांच जगत मानते हैं इस सत्य के संदर्भ में हैं।

आवाज़ (ध्वनि)

ध्वनि[१], दयापूर्ण परमेश्वर के उसी उच्छ्वास से उत्पन्न होती है जो कि कुन[२] शब्द के साथ सृष्टि निर्माण के समय बाहर आया। भारतीय संत उसे सरस्वती कहते हैं जो कि अन्य समस्त ध्वनियों का, स्वरों का तथा कम्पों का निदान कारण है :

शेर

'जहां कहीं भी तू सुनता है यह उसका ही मधुर स्वर है,
आख़िरकार इस लम्बी आवाज़ को किसने सुना है।'

भारतीय अद्वैतवादियों के अनुसार यह ध्वनि जिसे नाद कहते हैं तीन प्रकार की होती है।

प्रथम अनहद, जो हमेशा से थी, है और हमेशा रहेगी। सूफ़ी लोग इस ध्वनि को आवाज़े मुतलक़ या सुल्तानुल अज़्कार कहते हैं। यह ध्वनि अनन्त एवम् अनादि है और यही "महाकाश" के ज्ञान का आदिकारण है। यह ध्वनि दोनों जातियों के उच्च कोटि के संतों के अतिरिक्त प्रत्येक के लिए अकर्णगोचर है।

द्वितीय अहत या वह ध्वनि जो कि दो वस्तुओं में संघर्षण होने पर बिना शब्द संयोग के ही उत्पन्न होती है।

---

१. आवाज़।
२. मुसलमानों के विचार से 'सृष्टि का निर्माण ईश्वर ने अपने संकल्प के अनुसार किया और इसका प्रादुर्भाव कुन शब्द से हुआ'। क़ुरान के अनुसार 'आकाश तथा पृथ्वी का विचित्र जन्मदाता, जब वह किसी महान् कार्य का निर्णय कर लेता है तो वह केवल कुन हो जा कहता है और वह हो जाता है'। 'बदी उस समावाते वल अर्ज़ व इज़ा क़ज़ा अमरन फ़ इन्नामा लूहू कुन फ़यकून (क़ुरान २:११७)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तृतीय शब्द या वह ध्वनि जो शब्द स्वरूप के साथ उत्पन्न होती है। शब्द सरस्वती के साथ सादृश्य रखता है जो कि मुसलमानों के इस्मे आज़म[1] का तथा हिन्दू संतों के वेदमुख या ओउम् का उद्गम स्थान है। इस्मे आज़म का तात्पर्य है कि वह उत्पत्ति, स्थिति, संहार, इन तीनों का अधिकारी है और फ़तहा[2] ज़म्मा[3] और क़सरा[4] जो कि अकार, उकार, मकार के सदृश हैं, इसी से उत्पन्न हुए हैं।

हिन्दुस्तान के अद्वैतवादियों के मतानुसार इस ध्वनि के लिए एक विशेष लक्षण का निरूपण है जो कि हमारे इस्मे आज़म से निकटतम सादृश्य उपस्थित करता है और जिसमें जल, अग्नि, वायु, धूलि और पवित्र सत्व के चिन्ह प्रकाशित होते हैं।

नूर (प्रकाश)

प्रकाश[5] तीन प्रकार का होता है। यदि यह जलाल[6] के गुण से प्रकट होता है तो वह या तो सूर्य के रंग का या लाल माणिक्य के रंग का और या अग्नि के रंग का होता है। यदि यह जमाल[7] के गुण से प्रकाशित होता है तो या तो चन्द्रमा के रंग का या रजत के रंग का या मोती के रंग का और या पानी के रंग का होता है। सत्व का प्रकाश गुणों से शून्य होता है और उसका ज्ञान ईश्वर के भक्तों के अतिरिक्त जिनके विषय में ईश्वर (सर्वोच्च और सर्वशुद्ध) ने यह घोषित किया है :— "अल्लाह जिसको चाहता है उसको अपने प्रकाश से मार्ग प्रदर्शित करता[8] है", किसी को ज्ञात नहीं होता।

यह वह प्रकाश है जिससे मनुष्य न तो सुप्तावस्था में, न तो नेत्र निमीलनावस्था में और न तो अपने चक्षुओं से कुछ देखता है, न अपने कानों से कुछ श्रवण करता है, न अपनी वाणी से कुछ कहता है न अपनी घ्राणेन्द्रिय से कुछ सूंघता है न अपनी त्वगिन्द्रिय से कुछ अनुभव करता है और वास्तव में सुप्तावस्था में ही समस्त कार्यों को केवल आन्तरिक शक्ति के द्वारा ही पूर्ण करता है और किसी शरीरावयव, या बाह्य शक्ति या दीपक के प्रकाश की सहायता की आवश्यकता नहीं होती और दृष्टि, ज्ञान, श्रवण, रसनेन्द्रिय, घ्राण और त्वगिन्द्रिय एक ही में सम्मिलित हो जाते हैं–ऐसा यह सत्व का प्रकाश है, दूसरे शब्दों में यह ईश्वरीय प्रकाश है।

---

१. ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम, जिसके विषय में मुसलमानों का विश्वास है कि उसका ज्ञान मुहम्मद साहब के अतिरिक्त किसी अन्य को नहीं।

२. ज़बर, अ, आ, की मात्रा।

३. पेश उ, ऊ की मात्रा।

४. ज़ेर, इ ई और ए की मात्रा।

५. नूर।

६. तेज।

७. सौंदर्य।

८. 'यहदिल्लाहो लेनूरेही मय्यशाओ' (क़ुरान २४:३५)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"हे मेरे मित्र ! जो कुछ मैंने कहा है उस पर विचार करो क्योंकि यह विषय ज्ञान तथा ध्यान का है"।

"मुहम्मद साहब ने (ईश्वर का आशीर्वाद तथा शांति उन्हें प्राप्त हो) ध्यान की व्याख्या करते हुए कहा है एक क्षण का मनुष्यों का तथा अप्सराओं का ध्यानावस्थित होना एक वर्ष की उपासना से श्रेष्ठ है।"

प्रकाश इस पवित्र आयत[1] से प्रत्यक्ष है : 'अल्लाह पृथ्वियों और आकाशों का प्रकाश है[2]। हिन्दू संत उसे ज्योतिः स्वरुप, स्व प्रकाश और स्वप्न प्रकाश कहते हैं अर्थात् यह प्रकाश स्वयं ही सदैव देदीप्यमान रहता है चाहे वह संसार में प्रकट हो अथवा न हो। इसी प्रकार सूफ़ियों ने भी मुनव्वर शब्द के द्वारा नूर (प्रकाश) की व्याख्या की है। इसी प्रकार हिन्दुओं ने भी व्याख्या की है। इस विषय में ही यह पवित्र आयत है :

"अल्लाह आकाशों का तथा पृथ्वीयों का प्रकाश है, उसके प्रकाश की उपमा इस प्रकार हो सकती है कि जैसे कि आला है जिसमें एक दीपक है, दीपक शीशे में है, शीशा ऐसा है जैसे चमकते हुए स्पष्ट तारे, भाग्यवान् जैतून के वृक्ष के प्रकाश, न पूर्व का और न पश्चिम का, यद्यपि अग्नि तेल को नहीं छूती तो भी तेल नितान्त प्रकाश देता है, प्रकाश पर प्रकाश अल्लाह अपने प्रकाश से उसका मार्ग-प्रदर्शन करता है जिससे वह प्रसन्न होता है।"

लेकिन जो कुछ इस फ़क़ीर ने उपर्युक्त आयत से समझा है वह यह है कि मिशकात जो आला होता है, शारीरिक सत्ता वाले संसार को सूचित करता है, मिसबाह या दीपक सत्व के प्रकाश के लिए, और शीशा मनुष्य की आत्मा के लिए जो कि देदीप्यमान तारे के समान है, दीपक के कारण शीशा भी दीपक की भांति प्रतीत होता है और "वह दीपक प्रकाशित है" सत्य के प्रकाश के लिए सूचित करता है, और मुबारक (पवित्र वृक्ष) स्वयं पवित्र ईश्वर की ओर संकेत करता है। वह पवित्र और सर्वोच्च है जो कि पूर्व और पश्चिम की सीमाओं से रहित है। जैत से तात्पर्य रूहे आज़म (महान् आत्मा) है जिसका न आदि है और न अन्त है, अर्थात् जैत स्वयम् के द्वारा प्रकाश युक्त और बड़ा चमकीला है क्योंकि इसके समीप मृदुता तथा पवित्रता है और प्रकाशित किये जाने की आवश्यकता से रहित है। परिणाम स्वरूप उस्ताद अबू बक्र वासिती[3] (उन पर ईश्वर की दया हो) आत्मा का स्पष्टीकरण करते हुए कहता है : कि आत्मा का शीशा ऐसा प्रकाश युक्त है कि उसे नारे नासूत[4] के स्पर्श की आवश्यकता नहीं। यह निश्चित है कि अपनी

---

१. क़ुरान का वाक्य।

२. 'अल्लाहो नूरुस् समावाते वल अर्ज़' (क़ुरान २४:३५:)।

३. मुहम्मद बिन मूसा जो अबू बक्र वासिती कहलाते हैं, जुनैद तथा नूरी के मित्र थे। मर्व में ३२० हि० (९३२ ई०) में इनकी मृत्यु हुई।

४. मानवीय जगत की अग्नि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वाभाविक शक्ति के कारण यह स्वयम् आप से आप प्रकाशित होता है। यह जैत का प्रकाश नूरुन अला नूर (प्रकाश के ऊपर प्रकाश) है जो कि सूचित करता है कि अपनी अत्यधिक पवित्रता तथा प्रकाश के कारण यह प्रकाश से भरा हुआ प्रकाश है। कोई भी व्यक्ति इस रोशनी के कारण उसको (ईश्वर को) नहीं देख सकता, जब तक कि वह (ईश्वर) अपने ऐक्य के प्रकाश से मार्ग प्रदर्शन नहीं करता। इसलिए इस पूरी आयत का मुख्य तात्पर्य यह है कि सर्वोच्च और महान् पवित्र ईश्वर अपने सत्व के प्रकाश से सुन्दर और चमकदार परदे में प्रकाशवान् है। उसको गुप्त रखने या छिपाने के लिए परदा या अन्धकार नहीं है। उसके सत्व का प्रकाश रूहुल अरवाह[1] के आवरण में प्रकाशित होता है। रूहुल अरवाह (आत्माओं की आत्मा) आत्मा के आवरण में, और रूह (आत्मा) बदन (शरीर) के आवरण में बिल्कुल उसी प्रकार है जैसे कि दीपक शीशे के आवरण में, और शीशा आले में रक्खा हुआ, अपनी द्युति को उसके (ईश्वर) सत्व के प्रकाश से प्राप्त करता हुआ, अपने को स्वयम् प्रकाशित करता है।

इस प्रकार प्रकाश, प्रकाश की वृद्धि करता है।

---

१. आत्माओं की आत्मा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

III

रूयत (ईश्वर-दर्शन)

भारतीय अद्वैतवादी ईश्वर के दर्शन[१] को साक्षात्कार कहते हैं जिसका तात्पर्य है ललाट के चक्षुओं से ईश्वर दर्शन। जान लो कि इहलोक तथा परलोक में ईश्वर के दर्शन के विषय में, चाहे आन्तरिक अथवा वाह्य चक्षुओं से, किसी भी नबी[२] (ईश्वर उनको शांन्ति दे) अथवा पूर्ण वली[३] (ईश्वर उनकी आत्माओं को शुद्धता प्रदान करे) को कोई संदेह नहीं। समस्त किताब वाले[४] पूर्ण धर्मोपदेशक, और समस्त धर्मों के अधिष्ठाता, चाहे वह क़ुरान, वेद, तौरेत[५], इंजील[६], ज़बूर[७], पर विश्वास करने वाले हों, इस विषय में विश्वास रखते हैं। वह व्यक्ति जो ईश्वर दर्शन पर अविश्वास करता है वह अपनी जाति का विचारहीन और दृष्टिहीन सदस्य है, कारण कि यदि वह परम पवित्र परमेश्वर सर्वशक्तिमान है तो वह फिर अपने को प्रकाशित करने की शक्ति क्यों नहीं रख सकता। इस विषय की स्पष्ट व्याख्या सुन्नी सम्प्रदाय के उलमा[८] के द्वारा की गई है। लेकिन यदि यह कहा जाये कि वह पवित्र सत्व[९] देखा जा सकता है तो यह एक असम्भावना है क्योंकि वह पवित्रात्मा (ईश्वर) परम सुन्दर है और चूंकि वह निश्चित नहीं किया जा सकता और वह केवल पवित्रता के आवरण में प्रकाशित होता है, अतः उसे देखा नहीं जा सकता और ऐसा दर्शन असम्भव है। जो यह कहा जाता है कि वह परलोक जगत में देखा जा सकता है न कि इस लोक में तो यह निराधार है। क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है अतः प्रत्येक ढंग से, प्रत्येक स्थान में, प्रत्येक समय में जब वह चाहे अपने को प्रकाशित

१.. रूयत।

२. ईश्वर के दूत। मुसलमानों का विश्वास है कि १,२४००० नबी हुए हैं।

३.. सन्त।

४. 'किताब' शब्द का प्रयोग क़ुरान के लिए होता है और यहूदियों तथा ईसाइयों की समस्त आसामनी पुस्तकों को किताब कहते हैं। वे लोग "अहले किताब अथवा किताब पर श्रद्धा" रखने वाले कहलाते हैं।

५. मूसा पैग़म्बर की दैवी पुस्तक।

६. ईसा पैग़म्बर की दैवी पुस्तक।

७. दाऊद पैग़म्बर की दैवी पुस्तक।

८. इस्लाम धर्म के विद्धानों।

९. ईश्वर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करने में समर्थ है। जो उसके इस लोक म दर्शन नहीं कर सकता वह परलोक में बड़ा कठिन है कि दर्शन कर सके। उसने इस पवित्र आयत में स्वयं कहा है :—"जो इस लोक में नेत्रहीन है वह परलोक में भी नेत्रहीन ही होगा[१]।"

मोतज़ेला[२] तथा शीआ[३] जो कि सभी प्रकार की रूयत (दर्शन) को अस्वीकार करते हैं इस विषय में महान् भल करते हैं। वे यदि पवित्रात्मा के दर्शन के सामर्थ्य का निषेध करते तो यह अन्य बात थी किन्तु समस्त प्रकार के रूयत (दर्शन) का निषेध करना बहुत बड़ी भूल है, कारण कि अधिकांश पूर्ण सिद्ध नबियों ने अपने साधारण नेत्रों से ईश्वर का साक्षात्कार किया है और उसके पवित्र शब्दों को बिना किसी मध्यस्थ के सुना है। जब कि वे पूर्णरूप से उसके शब्दों को सुनने में समर्थ हो चुके हैं तो फिर उसके दर्शन में उन्हें समर्थ क्यों नहीं होना चाहिये। वास्तव में उन्हें ऐसा होना चाहिये। क्योंकि ईश्वर पर, फ़िरिश्तों पर, किताबों पर, नबियों पर, क़यामत पर, श्रेष्ठ और निन्दित[४] पर, पवित्र घरों[५] पर विश्वास रखना आवश्यक है, अतः साक्षात्कार पर भी विश्वास रखना आवश्यक है।

सुन्नी आलिमों ने इस विषय पर वादविवाद इस हदीस[६] को न समझने के कारण किया है जिसमें आयशा सिद्दीक़ा[७] ने मुहम्मद साहब (उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो)

---

१. 'व मन काना फ़ी हाज़ेही आमा फ़हुवा फ़िल आख़ेदते आमा' (क़ुरान १७:७२)।

२. मोतज़ेला : पृथक् होने वाले। मुसलमानों का एक सम्प्रदाय जिसका संस्थापक वासिल इब्न अता था जो हसन बसरी (मृत्यु ७२८ ई०) के सिद्धांतों से पृथक् हो गया। उनके मुख्य सिद्धान्त इस प्रकार हैं, (१) वे ईश्वर के उन गुणों को जो अनादि से संबन्धित हैं स्वीकार नहीं करते, (२) वे ईश्वर के शब्दों को सृजित मानते हैं, (३) उनका विश्वास है कि ईश्वरगुणों का ही जन्मदाता है अवगुणों का नहीं, (४) वे परलोक में नेत्रों द्वारा ईश्वर के दर्शन पर विश्वास नहीं रखते।

३. शीआ अनुयायी। अली तथा अली और फ़ातेमा की संतान के अनुयायी मुहम्मद साहब के प्रथम तीन खलीफ़ा, अबूबक्र, उमर तथा उस्मान को अपहरण-कर्त्ता मानते हैं।

४. 'खैर व शर'।

५. काबा तथा बैतुल मुक़द्दस।

६. मुहम्मद साहब की वाणी का संग्रह।

७. मुहम्मद साहब की प्रिय पत्नी जिनका जन्म ६१३ तथा ६१४ ई० के मध्य में हुआ। वे मुहम्मद साहब के प्रथम खलीफ़ा हज़रत अबूबक्र की पुत्री थीं, और उनका मुहम्मद साहब से ६२३ ई० में विवाह हुआ। उनकी मृत्यु १३ जुलाई ६७८ ई० को हुई। मुहम्मद साहब की हदीस बताने वालों में उन्हें मुख्य स्थान प्राप्त है। मुहम्मद साहब की १२१० हदीसें उनके द्वारा बताई जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से पूछा: क्या तूने अपने ईश्वर के कभी दर्शन किये ? इसके उत्तर में मुहम्मद साहब ने कहा "प्रकाश है जिसको मैं देख रहा हूँ"। वे इस हदीस का अर्थ इस प्रकार लगाते हैं: "वह प्रकाश है मैं इसे कैसे देख सकता हूँ"। परन्तु यह हदीस ईश्वर दर्शन के विरुद्ध प्रमाण-स्वरूप नहीं प्रस्तुत की जा सकती, क्योंकि यदि हम इसकी प्रथम व्याख्या को लेते हैं तो यह प्रकाश के आवरण में उसके पूर्ण साक्षात्कार का निर्देश करती है, यदि हम इसकी इस तरह व्याख्या करते हैं कि "वह प्रकाश है मैं उसके कैसे दर्शन कर सकता हूँ" तो यह उसकी शुद्ध और निर्गुणात्मा को सूचित करती है। इसलिए इससे अर्थ का मतभेद नहीं अपितु मुहम्मद साहब का चमत्कार है जिन्होंने एक हदीस से दो समस्याओं की व्याख्या की है। यह पवित्र आयत, "उस दिन कुछ मुख अपने स्वामी की ओर देखते हुए देदीप्यमान होंगे[१]"। हमारे ईश्वर (उसका गौरव उन्नतिशील हो) के रूयत के पक्ष में प्रमाण है। यह आयत "चक्षुरिन्द्रिय उसको[२] ग्रहण नहीं करतीं और वह समस्त चक्षुरिन्द्रियों को ग्रहण करता है और वह व समस्त सूक्ष्मतम वस्तुओं का ज्ञाता है[३]" भी उसके निर्गुणत्व को प्रमाणित करती है क्योंकि नेत्र उसको निर्गुणत्व[४] में नहीं देख सकते, यद्यपि वह सबको देखता है और अत्यधिक सौंदर्य तथा निर्गुणत्व को धारण करता है। हुवा[५] शब्द, जो कि पवित्र आयत में प्राप्य है, उस पवित्रात्मा के दर्शन न होने को प्रमाणित करता है। ईश्वर के साक्षात्कार के पांच ढंग हैं:

प्रथम: हृदय के नेत्रों से स्वप्न में।

द्वितीय: जागृत अवस्था में साधारण नेत्रों से उसके दर्शन।

तृतीय: सुषुप्ति और जागृत अवस्था के मध्य की अवस्था में उसका साक्षात्कार जो कि एक विशेष प्रकार की असावधानी की सुषुप्ति है।

चतुर्थ: विशेष संकल्प की अवस्था में उसका दर्शन।

पंचम: विश्व के आन्तरिक और बाह्य प्रचुर संकल्पों में एक आत्मा का साक्षात् करना।

इस प्रकार से हमारे रसूल मुहम्मद साहब ने दर्शन किये (ईश्वर उनको शांति दे) जिनकी आत्मा बीच ही में अदृश्य हो गई और दृष्टा और दृश्य एक ही में मिल गये

---

१. 'वुजूहो यौ मैं जिन ना जिरतो इला रब्बेहा नाज़िरतो' (क़ुरान ७५:२२)।

२. ईश्वर को।

३. 'ला दुत रे कुहुल अबसारो व हुवा युदरे कुल अबसार वा हुवल् लतीफ़ुल खबीर' (क़ुरान ६:१०४)।

४. उसकी पूर्ण योग्यता को।

५. वह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और उसकी सुषुप्ति, जागृति, असावधानी सब एक दृष्टिगोचर होने लगे और उसके आन्तरिक और बाह्य चक्षु मिल कर अभिन्न हो गये थे ।

पूर्ण रूयत[1] की ऐसी अवस्था होती है जिसमें कि न तो इस लोक की आवश्यकता है और न परलोक की। प्रत्येक स्थान और प्रत्येक काल में सुलभ है[2] ।

---

१. साक्षात्कार।

२. दारा शिकोह ने रूयत की समस्या का 'सकीनतुल औलिया' में बड़े विस्तार से उल्लेख किया है और अपने मत की पुष्टि में अनेकों प्रमाण दिये हैं। दारा शिकोह की इस रुबाई में भी इस समस्या का समाधान किया गया है :

रुबाई

जो लोग ईश्वर के उस काल (लोक) में दर्शन करेंगे,
सर्व प्रथम तुझे ज्ञात होना चाहिये कि वे उसे इस संसार में भी देखते हैं।
ईश्वर के दर्शन यहां और वहां एक समान हैं,
प्रत्येक क्षण प्रत्यक्ष रूप से तथा गुप्त रूप से वे उसे देखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

IV

इस्माये अल्लाह तआला (सर्वोच्च ईश्वर के नाम)

ज्ञात होना चाहिये कि अल्लाह तआला[१] के नाम असंख्य और ज्ञान एवं बुद्धि से परे हैं। भारतीय संतों की भाषा में ज़ाते मुतलक़[२], बहत[३], सिर्फ़[४], ग़बुल ग़ैब[५], हज़रते वाजिबुल वुजूद[६] को आसंग[७], त्रिगुण, निरंकार, निरंजन, सत् और चित् के नाम से पुकारते हैं।

यदि इल्म[८] उससे (ईश्वर से) संबन्धित है तो मुसलमान उसे 'अलीम[९]' और भारतीय संत उसको 'चेतन' कहते हैं। 'अलहक़' को भारतीय संत "अनन्त" कहते हैं तथा 'क़ादिर' के लिए वे 'समर्थ' का प्रयोग करते हैं। 'सभी' के लिए 'श्रोता' और 'बसीर' के लिए 'दृष्टा' शब्द का प्रयोग करते हैं। यदि उस पूर्ण सत्व के साथ कलाम[१०] संबन्धित है तो वे वक्ता कहते हैं। अल्लाह को वे ओम् कहते हैं, होवा को वे सः और फ़िरिश्तों को देवता कहते हैं।

मज़हरे अतम[११] को अवतार कहते हैं। अवतार वह होता है जिसके द्वारा ईश्वर का वैभव इस रूप में प्रकाशित होता है जैसा कि उस विशेष काल में उस जाति के किसी व्यक्ति विशेष में प्रकाशित न हुआ हो।

---

१. सर्वोच्च ईश्वर।

२. पूर्ण।

३. शुद्ध।

४. जिसमें कुछ अन्य सम्मिलित न हो।

५. परोक्ष का भी परोक्ष।

६. अनिवार्य सत्व।

७. मूल में 'आसन'।

८. ज्ञान।

९. ज्ञानी।

१०. वार्ता।

११. पूर्ण प्रकाशन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वही[1] को जो कि पैग़म्बर पर प्रकट होती है आकाशवाणी कहते हैं और यह नाम इस कारण से दिया गया है कि हमारे पैग़म्बर (ईश्वर उनको शांति दे) का कथन है कि मेरे लिए सबसे कठिन समय 'वही' का समय होता है जब कि मैं उसे घंटी की ध्वनि के समान या वरट (बर्र) के भिनभिनाने के समान सुनता हूँ। कारण कि यह ध्वनि आकाश से आती है, अतः इसे आकाशवाणी कहा जाता है।

वे आकाशी पुस्तकों को वेद कहते हैं।

जिनों की सुन्दर स्त्रियों को जो कि परियां हैं अप्सरा[2] कहते हैं। दुष्टों को जो कि दैत्य तथा शैतान हैं राक्षस कहते हैं। आदमी को मनुष्य, वली[3] को ऋषि तथा नबी को महासिद्ध[4] कहते हैं।

---

१. दैवी प्रेरणा। मुसलमानों का विश्वास है कि क़ुरान का प्रत्यक शब्द जो कि ईश्वर का संदेश है मुहम्मद साहब को जिबरील फ़िरिश्ते द्वारा ज्ञात हुआ था और मुहम्मद साहब ईश्वर की इच्छा जाने बिना कोई निर्णय न देते थे। यह इच्छा जिबरील द्वारा प्राप्त होती थी।

२. मूल पुस्तक में 'अनछरा'।

३. सन्त।

४. मूल पुस्तक में 'महा सुद्ध' है किन्तु 'महासिद्ध' उचित है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

V

नबूवत[1] व विलायत[2]

नबियों[3] को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है :

प्रथम : वे जो कि ईश्वर का साक्षात्कार कर चुके हैं, चाहे बाह्य चक्षुओं से या आन्तरिक चक्षुओं से।

द्वितीय : वे जो ईश्वर की ध्वनि सुन चुके हों चाहे केवल ध्वनि या संयुक्त ध्वनि शब्द के रूप में वाक्य।

तृतीय: वे जो कि फ़रिश्तों का साक्षात्कार कर चुके हैं अथवा उनकी ध्वनि सुन चुके हैं।

नबूवत तथा विलायत तीन प्रकार की होती है :

१. नबूवत व विलायत तन्जीही[4]।

२. नबूवत व विलायत तशबीही[5]।

३. नबूवत व विलायत जामे उत् तशबीह वत् तन्जीह[6]।

प्रथम : नबूवते तन्जीही जैसी कि नूह[7] की नबूवत थी (ईश्वर उन्हें शांति दे) जिसने कि तन्जीह (शुद्धता) में ही ईश्वर का साक्षात्कार किया और अपने धर्म को स्वीकार करने के लिए मनुष्यों को आमंत्रित किया, परन्तु कुछ व्यक्तियों के अतिरिक्त उनकी तन्जीह के कारण किसी ने स्वीकार न किया, परिणाम स्वरूप वे विनाश के सागर में डुबा दिये गये। इसी प्रकार हमारे समय के ज़ाहिद[8] ईश्वर के विशुद्ध दर्शन के लिए शिष्यों को आमंत्रित करते हैं, परन्तु उन शिष्यों में से न तो कोई भी आरिफ़[9] की अवस्था को कभी प्राप्त होता है और न उनके उपदेशों से कोई लाभान्वित होता है। वे सुलूक[10] और तरीक़त[11] के मार्ग में नष्ट होते हुए कभी ईश्वर तक नहीं पहुँचते।

---

१. नबी का कार्य।
२. वली का कार्य।
३. नबी, ईश्वर का दूत, पैग़म्बर।
४. शुद्ध नबूवत तथा विलायत।
५. अनुरूप नबूवत तथा विलायत।
६. शुद्ध तथा अनुरूप से सम्मिश्रित नबूवत तथा विलायत।
७. ईश्वर के एक दूत।
८. तपस्वी।
९. ज्ञानी, ईश्वर का ज्ञान रखने वाला।
१०. आध्यात्मिक यात्रा।
११. आध्यात्मिक मार्ग।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

द्वितीय : नबूवते तशबीही, मूसा की (ईश्वर उनको शांति दे) नबूवत के समान हैं जिन्होंने स्वयम् वृक्ष की अग्नि में ईश्वर के दर्शन किये और मेघों से ईश्वर के शब्द सुने। मूसा के अनुयायियों के एक विशाल समूह ने ईश्वर के नर रूप में विश्वास रखने के कारण गाय की पूजा प्रारम्भ कर दी और पाप करने लगा। इस समय कुछ अनुयायी, जिनका बिना समझे बूझे सिद्ध पुरुषों का अनुमोदन करना ही जीवन में व्यवसाय है, शुद्धता से दूर होकर, ईश्वर को मनुष्य के आकार में मानने के सिद्धांत पर आचरण करने लगे हैं इसलिए सुन्दर और आकर्षक मुखों के देखने तथा भोग विलास में ग्रस्त हैं। उन लोगों का अनुगमन नहीं करना चाहिये।

पद्य

'प्रत्येक हृदयाकर्षक मुख जिसको तुम देखते हो,
तुम्हारे नेत्रों के समक्ष से आकाश शीघ्र ही उसे हटा देगा।
जाओ, और अपना हृदय ऐसे को दो जो कि जीवन के चक्र में,
सदैव से है और सर्वदा तेरे साथ रहेगा ।।

तृतीय : नबूवते जामे उत् तन्जीह वत्तशबीह, मुहम्मद साहब की नबूवत तन्जीह और तशबीही का सम्मिश्रण है, जिन्होंने मुतलक़[1] और मुक़य्यद[2], निर्गुण और सगुण, समीप और दूर को एकत्र कर दिया। इसके संवन्ध में इस पवित्र आयत में भी संकेत है: "उसकी समानता (उपमा) के समान कुछ नहीं है, वही सुनना है वही देखना है"। "उसकी समानता के समान कुछ नहीं" का संकेत उसकी तंजीह की ओर है और "वही सुनना और देखना[3] है" तशबीह के विषय में प्रमाण है। यह पूर्णता और विश्व व्यापकता की सर्वोच्च और सर्वोन्नत अवस्था है जो कि केवल मुहम्मद साहब के लिए निश्चित है (ईश्वर उनको शांति दे)।

इसलिए हमारे रसूल[4] ने पूर्व के कोण से पश्चिम के अन्त तक समस्त विश्व को आवृत्त कर लिया है। नबूवते तन्जीही, नबूवते तशबीही से वंचित है और नबूवते तशबीही, नबूवते तन्जीही से वंचित है। परन्तु जामे नबूवत[5] तन्जीही और तशबीही को सम्मिलित कर देती है, जैसा कि इस पवित्र आयत में कहा गया है: " वह प्रथम तथा अंतिम, सर्वप्रधान और गुप्त वस्तुओं का ज्ञाता है"।[6]

---

१. स्वतन्त्र।
२. निश्चित।
३. 'लैसा क मिस्लेही शैउन व होवस् समी उल बसीरो' (क़ुरान ४२:११)।
४. मुहम्मद साहब ने।
५. संयुक्त।
६. 'होवल अव्वलो वल आख़िरो वज़् ज़ाहिरो वल बातिनो' (क़ुरान ५७:३)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

' इसी प्रकार विलायत केवल इस उम्मत[1] के सिद्ध पुरुषों के लिए सीमित है जिनकी जातियों में तुम श्रेष्ठ हो[2]", अर्थात् वे लोग सर्व श्रेष्ठ हैं जो तन्जीह और तशबीह को संयुक्त करते हैं।"

इस प्रकार हमारे रसूल मुहम्मद साहब के समय में (ईश्वर उनको शांति दे तथा उनको प्रणाम हों) वलियों में से, अबू बक्र,[3] उमर[4], उथमन,[5] अली,[6], हसन[7] और हुसेन[8], सित्तये बाक़िया,[9] अशरये मुबश्शिरा,[10] अकाबिरे महाजिर[11], अनसार[12]

---

१. अनुयायी, मुसलमान।

२. 'कुनतुम ख़ैरा उम्मतिन उखरेजत लिन् नास' (क़ुरान ३:१०९)।

३. अबू बक्र मुहम्मद साहब के प्रथम खलीफ़ा, जो ६३२ ई० में मुहम्मद साहब की मृत्यु के उपरान्त खलीफ़ा हुए। उनकी मृत्यु २३ अगस्त ६३४ ई० को हुई।

४. उमर बिन अल खत्ताब, अबू बक्र के बाद खलीफ़ा हुए और दस वर्ष शासन करने के उपरान्त ६४४ ई० में उनकी मृत्यु हुई।

५. उस्मान बिन अफ़्फ़ान् उमर के उपरान्त खलीफ़ा हुए। १७ जून ६५६ ई० को इनकी हत्या कर दी गई।

६. अली बिन अबी तालिब, उस्मान के उपरान्त ख़लीफ़ा हुए। वे मुहम्मद साहब के चचेरे भाई तथा जामाता थे। उनकी २७ जनवरी ६६१ ई० को हत्या कर दी गई।

७. हसन, अली बिन अबी तालिब के ज्येष्ठ पुत्र। वे अपने पिता के उपरान्त खलीफ़ा हुए किन्तु छः मास उपरान्त मुआविया के पक्ष में अपने अधिकार त्याग दिये।

८. हुसेन, हसन के छोटे भाई। मुआविया के उपरान्त उन्हें ख़लीफ़ा नियुक्त होना चाहिये था किन्तु मुआविया ने अपने पुत्र यज़ीद को ख़लीफ़ा बना दिया जिसने १० मुहर्रम ६१ हि० (१० अक्तूबर ६७० ई०) को करबला में उनके अन्य साथियों सहित उनकी हत्या करा दी।

९. ६ बाक़ी।

१०. वे १० व्यक्ति जिन्हें सुखद समाचार प्राप्त हुए। यह मुहम्मद साहब के १० प्रसिद्ध सहाबियों (सहचरों) की, जिनके स्वर्ग में प्रविष्ट होने की मुहम्मद साहब ने भविष्यवाणी कर दी है, उपाधि है। वे अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली, तलहा बिन जुबैर, अब्दुर्रहमान, साद बिन अबी वक़्क़ास, सईद बिन जैद, अबू उबैदा बिन अल जर्राह हैं।

११. प्रतिष्ठित महाजिर : मुहम्मद साहब के साथ जो लोग मक्के से मदीने चले गये थे वे महाजिर कहलाते हैं।

१२. अनसार : सहायता प्रदान करने वाले; मदीने के वे मुसलमान जिन्होंने मुहम्मद साहब के मक्के से ६२१ ई० में मदीने पहुँचने के उपरान्त उनकी सहायता की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तथा अहले सूफ़िया[1] थे। ताबेईन[2] में उवैस क़रनी[3] इत्यादि।

अन्य काल में ज़ुन्नून मिस्री,[4] फ़ुज़ैल अयाज़,[5] मारुफ़ करख़ी,[6] इबराहीम अदहम,[7] बिश्रहाफ़ी[8], सरी सक़ती,[9] बायज़ीद बिस्तामी[10]।

---

१. सूफ़ी लोग।

२. ताबेईन (अनुगासी): वे लोग जिन्होंने मुहम्मद साहब के किसी सहाबी (सहचर) से भेंट तथा वार्तालाप की थी।

३. उवस क़रनी बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी तथा मुहम्मद साहब के समकालीन थे। उनकी मृत्यु ३२ तथा ३९ हि० (६५२ ई० तथा ६५९ ई०) के मध्य में बताई जाती है।

४. ज़ुन्नून अबुल फ़ैज़ बिन इबराहीम अल मिस्री, मालिक बिन अनस के शिष्य थे और मिस्र में निवास करते थे। इनकी मृत्यु ८६०ई० में हुई। वे अपनी पवित्रता तथा धर्मनिष्ठता के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। सर्व प्रथम सूफ़ियों के सिद्धांतों की उन्हीं ने व्याख्या की।

५. फ़ुज़ैल बिन अयाज़ कूफ़ा निवासी थ। कुछ लोगों का मत है कि वे ख़ुरासान के निवासी थे। प्रारम्भिक मुसलमान सूफ़ियों में वे बड़े प्रसिद्ध हैं। उनकी मृत्यु ८०३ ई० में हुई।

६. अबू महफ़ूज़ मारुफ़ करख़ी, सरी सक़ती के गुरू थे। सर्व प्रथम वे जादूगर थे किन्तु बाद में अपने पिता फ़ीरोज़ अथवा फ़ीरोज़ान के साथ वे अली बिन मूसा अर्रिज़ा के प्रभाव से मुसलमान हो गये। बग़दाद में दूसरी अथवा आठवीं मुहर्रम २०० हि० (१२ अगस्त अथवा १८ अगस्त ८१५ ई०) को उनकी मृत्यु हो गई।

७. इबराहीम बिन अदहम बिन मन्सूर बिन यज़ीद बिन जाबिर (अबू इस्हाक़) बड़ प्रसिद्ध सूफ़ी हुए हैं। वे बल्ख़ के निवासी थे और वहां बादशाहों के समान राज्य किया करते थे किन्तु बाद में अपना पद त्याग कर संतों के समान जीवन व्यतीत करने लगे। सूफ़ी हो जाने के उपरान्त वे शाम पहुँचे जहां १६०हि० तथा १६६ हि० (७७६ ई०) के मध्य में इनकी मृत्यु हो गई।

८. बिश्र बिन हारिस बिन अब्दुर्रहमान हाफ़ी, अबू नस्र, प्रारम्भिक मुसलमान सूफ़ियों में से थे। वे मर्व के निवासी थे किन्तु वे अपना अधिकांश जीवन बग़दाद में व्यतीत करते रहे। उनकी मृत्यु १० मुहर्रम २२७ हि० (३० अक्तूबर ८४१ ई०) में बताई जाती है।

९. अबुल हसन सरी सक़ती, मारूफ़ करख़ी के चेले थे और जुनैद तथा बग़दाद के अन्य सूफ़ियों के गुरू थे। उनकी मृत्यु ३ रमज़ान २५३ हि० (६ सितम्बर ८६७ ई०) में हुई।

१०. अबू यज़ीद तैफ़ूर बिन ईसा बिन आदम बिन सुरूशान जो बायज़ीद बिस्तामी के नाम से प्रसिद्ध हैं, बिस्ताम के बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी थे। वे इस्लामी तसव्वुफ़ में 'फ़ना' (विनाश) को प्रसिद्धि देने के लिए मशहूर हैं और सर्वेश्वरवाद में उनका दृढ़ विश्वास था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उस्ताद अबुल क़ासिम जुनैदी[१], सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी,[२] अबू सईद खर्राज़[३] रूवेम[४], अबुल हसन नूरी[५], इबराहीम ख़व्वास[६], अबू बक्र शिबली[७], अबू बक्र वास्ती[८], इत्यादि।

---

१. अबुल क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अल जुनैद अल ख़र्राज़ अल कवारीरी, जो सैयिदुत्-तायेफ़ा तथा ताऊसुल उलमा के नाम से प्रसिद्ध थे, बग़दाद के बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी थे। उनकी मृत्यु बग़दाद में २९७ हि० (९१०ई०) में हुई।

२. अबू मुहम्मद सहल बिन अब्दुल्लाह बिन यूनुस बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी हुए हैं। उनका जन्म तुस्तर (अहवाज) में २०३ हि० (८१८ ई०) में हुआ। वे जुन्नून मिस्री के शिष्य थे। उन्हें उनके देश से निर्वासित कर दिया गया था और बसरा में २८३ हि० (८९६ ई०) में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी १००० शिक्षायें उनके शिष्य मुहम्मद बिन सालिम (मृत्यु २९७ हि०/९०९ ई०) ने संकलित कीं।

३. अबू सईद अहमद बिन ईसा अल ख़र्राज़, मुहम्मद बिन मन्सूर अन्नूसी के शिष्य एवं जुन्नून, बिश्र तथा सरी के मित्र थे। कहा जाता है कि फ़ना तथा बक़ा के (सर्वथा विनाश तथा अवस्थिति) के सिद्धांतों को उन्होंने प्रसिद्धि प्रदान की। यह भी कहा जाता है कि उन्होंने तसव्वुफ़ संबन्धी ४०० ग्रन्थों की रचना की। उनकी मृत्यु ९०० ई० में हुई।

४. अबू मुहम्मद रूवेम बिन यज़ीद बग़दाद के प्रसिद्ध सूफ़ी थे और जुनैद के शिष्य थे। क़शफ़ुल महजूब में हुजवेरी ने उनकी गुलातुल वाजिदीन नामक रचना की बड़ी प्रशंसा की है। उनकी मृत्यु ९१४ ई० में हुई।

५. अबुल हुसैन अहमद बिन मुहम्मद अन्नूरी जुनैद के मित्र तथा सरी के शिष्य थे। उनका जन्म बग़दाद में तथा मृत्यु २९५ हि० (९०७ ई०) में हुई। वे तसव्वुफ़ को फ़क़ीरी से श्रेष्ठ समझते थे।

६. अबू इस्हाक़ इबराहीम बिन अहमद अल ख़व्वास ने तसव्वुफ़ के नीति-शास्त्र संबन्धी कई ग्रन्थों की रचना की। कुछ लोगों के मतानुसार वे बग़दाद के निवासी तथा नूरी एवं जुनैद के मित्र थे।

७. अबू बक्र बिन दुलाफ़ बिन जहदर अश्शिबली जुनैद के शिष्य थ। उनकी मृत्यु ३३४ हि० (९५४ ई०) में हुई।

८. मुहम्मद बिन मूसा, जो अबू बक्र वास्ती के नाम से प्रसिद्ध हैं, हज़रत जुनैद एवं हज़रत अबुल हसन नूरी के मित्र थे। उनका जन्म मर्व में ३२० हि० (९३२ ई०) के पूर्व हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अन्य काल में अबू सईद अबुल खैर[१], शेखुल इस्लाम ख़्वाजा अब्दुल्लाह अनसारी[२] शेख अहमदे जाम,[३] मुहम्मद माशूक़ तूसी,[४] अहमद ग़ज़ाली,[५] अबुल क़ासिम गुरगानी[६]।

अन्य काल में मेरे पीर[७] शेख मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी,[८] अबू मदैन मग़रिबी,[९]

---

१. अबू सईद फ़ज़लुल्लाह बिन अबुल खैर, सूफ़ी कविता की रुबाइयों के प्रसिद्ध रचियता हुए हैं। उनका जन्म ख़ावरान के महवा नामक ग्राम में ७ दिसम्बर ९६७ ई० को हुआ था। कहा जाता है वे प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा दार्शनिक बू अली सेना के सम्पर्क में आये। उनकी मृत्यु २ जनवरी १०४८ ई० को हुई ।

२. शेखुल इस्लाम ख़्वाजा अबू इस्माईल अब्दुल्लाह अनसारी "मुनाजात" प्रार्थना तथा अन्य तसव्वुफ़ संबन्धी ग्रन्थों के लेखक थे। उनका जन्म हिरात में ४ मई १००६ ई० को हुआ। सूफ़ियों की जीवनियों तथा शिक्षाओं से सम्बन्धित उन्होंने हिरात में अनेक प्रवचन किये जो 'तबक़ाते अब्दुल्लाह अनसारी' नामक ग्रन्थ में संकलित हुए।

३. शेखुल इस्लाम अबू नस्र अहमद बिन अबुल हसन जामी ज़न्दापील का जन्म जाम में १०४९ ई० में हुआ। कहा जाता है कि उन्होंने तसव्वुफ़ संबन्धी लगभग १४ ग्रन्थों की रचना की जिनमें से कुल पांच ग्रन्थ प्राप्य हैं। उनकी कविताओं का संग्रह भारतवर्ष में कई बार प्रकाशित हो चुका है। उनकी मृत्यु ११४१ ई० में हुई।

४. मुहम्मद माशूक़ अत्तुसी क़शफ़ुल महजूब के लेखक के अनुसार बहुत बड़े सूफ़ी थे। कहा जाता है कि अबू सईद अबुल खैर अपने मित्रों सहित कई बार इनके दर्शनार्थ गये थे। वे तूस में दफ़न हुए।

५. शेख अहमद अल ग़ज़ाली, इमाम ग़ज़ाली के भाई थे और उन्होंने तसव्वुफ़ तथा इस्लाम संबन्धी अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनकी मृत्यु ५१७ हि० (११२३–२४ ई०) में हुई।

६. अबुल क़ासिम अली बिन अब्दुल्लाह अल गुरगानी क़शफ़ुल महजूब के लेखक हुजवेरी के समकालीन थे। उनकी मृत्यु ४५० हि० (१०५८ ई०) में हुई।

७. सूफ़ियों के गुरू पीर कहलाते थे।

८. शेख मुहीउद्दीन अबू मुहम्मद अब्दुल क़ादिर बिन अबी सालेह मूसा अल जीली बग़दाद के बड़े प्रसिद्ध संत हुए हैं। उनका जन्म १०७७–७८ ई० तथा मृत्यु ११७७ ई० में हुई। क़ादिरी सिलसिले के वही संस्थापक थे। दारा शिकोह उसी सिलसिले का मुरीद था।

९. अबू मदैन शोऐब बिन हुसेन अन्दलुसी का जन्म सोवल के समीप कौटिल्लानां नामक ग्राम में हुआ था। जामी के अनुसार मुहीउद्दीन इब्नुल अरबी के वे गुरू थे। उनका सिद्धांत यह था, "कहो अल्लाह और जो कुछ उससे संबन्धित है, उसे त्याग दो, यदि तुम सच्चा उद्देश्य प्राप्त करना चाहते हो।" उनकी मृत्यु ११९७–९८ अथवा ११९३ ई० में हुई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शेख मुही उद्दीन इब्नुल अरबी,[1] शेख़ नज्मुद्दीन कुबरा,[2] शेख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार[3] तथा मौलना जलालुद्दीन रूमी[4] हुए हैं।

अन्य काल में ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती,[5] ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द[6] ख़्वाजा अहरार,[7] मौलाना अब्दुर्रहमान जामी,[8] तथा अन्य काल में मेरे शेख़ अपन काल के

---

१. शेख़ मुहीउद्दीन इब्नुल अरबी का जन्म मुरसिया (स्पेन) में २८ जुलाई ११६५ ई० में हुआ। वे बहुत बड़े सूफ़ी समझे जाते हैं। उन्होंने लगभग १५० रचनायें की जिनमें फ़ुसूअल हिकम, फ़ुतूहातुल मक्किया, तथा दीवान बड़ी प्रसिद्ध हैं। उनकी मृत्यु दमिश्क में १६ नवम्बर १२४० ई० में हुई। सर्वेश्वरवाद को उनकी रचनाओं द्वारा बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

२. अबुल जन्नाब अहमद बिन उमर अल ख़िवाक़ी जो शेख़ नज्मुद्दीन कुबरा के नाम से प्रसिद्ध हैं, ख़्वारज़्म के बड़े मशहूर सूफ़ी हुए हैं। मंगोलों के उत्पात में ख़्वारज़्म में १२२१ ई० में इनकी हत्या हो गई।

३. अबू तालिब मुहम्मद बिन अबू बक्र इबराहीम जो फ़रीदुद्दीन अत्तार के नाम से प्रसिद्ध हैं, बड़े मशहूर सूफ़ी कवि हुए हैं। कहा जाता है कि उन्होंने ११४ ग्रन्थों की रचना की जिनमें अब ३० पाये जाते हैं। उन्होंने सूफ़ियों की जीवनियों के प्रसिद्ध ग्रन्थ तज़किरतुल औलिया की रचना की। उनकी मृत्यु ६२७ हि० (१२२९-३०ई०) के लगभग हुई।

४. जलालुद्दीन मुहम्मद जो जलालुद्दीन रूमी के नाम से प्रसिद्ध हैं। १२०७ ई० में बल्ख़ में पदा हुए। वे विभिन्न स्थानों में निवास करते हुए अन्त में कूनिया पहुंचे जहां वे शम्स तबरेज़ के सम्पर्क में आये। सूफ़ी कविता को उनकी मसनवी द्वारा बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। उनकी मृत्यु १२३१ ई० में हुई।

५. मुईनुद्दीन मुहम्मद चिश्ती भारतवर्ष के सूफ़ियों में बड़े प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म ११४२ ई० में हुआ। ख़ुरासान से बग़दाद होते हुए वे ११९३ ई० में देहली और वहां से अजमेर पहुंचे, जहां १२३६ ई० में उनकी मृत्यु हो गई। वे चिश्ती सिलसिले के संस्थापक थे।

६. मुहम्मद बिन मुहम्मद, जो ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द कहलाते हैं, नक़्शबन्दिया सिलसिले के संस्थापक थे। बुख़ारा में १३२७ ई० में उनका जन्म हुआ। उनकी मृत्यु १३८८ ई० में हुई।

७. ख़्वाजा नासिरुद्दीन उबैदुल्लाह अहरार, जो ख़्वाजा अहरार के नाम से प्रसिद्ध हैं, १४०३ ई० में पैदा हुए । उनकी मृत्यु १४८९ ई० में हुई।

८. नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी ईरान के बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी हुए हैं। उनका जन्म जाम के एक ग्राम में ७ नवम्बर १४१४ ई० को हुआ। वे सुल्तान अबू सईद तथा सुल्तान हुसेन बाईक़रा के दरबार में उपस्थित हुए और ९ नवम्बर १४९२ ई० को हिरात में उनकी मृत्यु हो गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जुनैद शाह मीर,[१] मेरे गुरु मियां बारी,[२] मेरे मुर्शिद मुल्ला शाह[३], शाह मुहम्मद दिलरुबा,[४] शेख़ तैयिब सरहिन्दी[५] तथा बाबा लाल बैरागी[६] हैं।

VI

ब्रह्माण्ड

ब्रह्माण्ड से तात्पर्य है कुल[७] जो कि हज़रते वुजूद[८] के प्रकट होने के निर्धारण को गोलाकार रूप में सूचित करता है। क्योंकि उसका किसी ओर को झुकाव तथा संबन्ध नहीं है अतः उसका सभी से संबन्ध समान है। और प्रत्येक सृजित पदार्थ एवम् प्रदर्शित वस्तु इसके मध्य में स्थान ग्रहण करती है। इसलिए भारतीय अद्वैतवादियों ने इसे ब्रह्माण्ड नाम प्रदान किया है।

जिहात (दिशा)

मुसलमान अद्वैतवादी, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, शिखर, और अन्तस्तल प्रत्येक को विभिन्न दिशायें मानते हैं, अतः इनके मतानुसार छः दिशायें हैं जब कि हिन्दुस्तान के अद्वैतवादियों के विश्वास के अनुसार कुल दस दिशायें हैं। वे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के मध्य को भी भिन्न-भिन्न दिशायें मानते हैं। इस प्रकार वे दस दिशा मानते हैं।

---

१. मीर मुहम्मद बिन साईदाता जो मियां मीर अथवा मियां जियु के नाम से प्रसिद्ध हैं, ९३८ हि० (१५३१—३२ ई०) में पैदा हुए। वे लाहौर पहुंच कर वहीं निवास करने लगे। और लगभग ६० वर्ष तक वहां रहे। शाहजहां तथा शिकोह उनके प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे और उनके दर्शनार्थ जाया करते थे। १०७ वर्ष की अवस्था में ७ रबी-उल-अव्वल १०४५ हि० को उनकी मृत्यु हुई।

२. मियां बारी भी दारा शिकोह के गुरु थ और १५ रबी-उल-अव्वल १०६२ हि० (१६५१-५२ ई०) को उनकी मृत्यु हुई।

३. मुल्ला शाह मुहम्मद बिन मुल्ला अब्द मुहम्मद जो मुल्ला शाह तथा लिसानुल्लाह (ईश्वर की ज़बान) कहलाते हैं, बदख़्शां से १६१४ ई० में लाहौर आये और मियां मीर के शिष्य हो गये। दारा शिकोह उनका बड़ा सम्मान करता था और उन्हीं ने उसे क़ादिरिया सिलसिले का १६३९ ई० में मुरीद बनाया। मियां मीर की मृत्यु के उपरान्त मुल्ला शाह कश्मीर चले गये जहां १६६१—६२ ई० में उनकी मृत्यु हो गई।

४. शेख़ शाह मुहम्मद दिलरुबा भी दारा शिकोह के गुरु थे। दारा शिकोह ने हसनातुल आरेफ़ीन में इनकी भूरि भूरि प्रशंसा की है।

५. शेख़ तैयिब सरहिन्दी का हसनातुल आरेफ़ीन में अधिक उल्लेख नहीं। उन्हें बाबा प्यारे का मित्र बताया गया है।

६. बाबा लाल बैरागी का दारा शिकोह बड़ा भक्त था।

७. सम्पूर्ण।

८. अनिवार्य सत्व।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आसमान (आकाश)

हिन्दुस्तानियों के अनुसार आकाश जो कि गगन[१] कहे जाते हैं संख्या में आठ हैं। इनमें से सात, सात ग्रहों के स्थान हैं जिनको ज़ुहल,[२] मुश्तरी,[३] मिर्रीख,[४] शम्स,[५] ज़ुहरा,[६] उतारिद[७] और क़मर[८] कहते हैं। हिन्दुस्तान वालों की भाषा में वे सात नक्षत्र कहे जाते हैं जो कि शनिश्चर, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध और चन्द्रमा हैं। आकाश, जिसमें समस्त स्थिर नक्षत्र हैं, क़ो वे अष्टमाकाश कहते हैं और दार्शनिक लोग इसी आकाश को फ़लके हश्तुम[९] तथा फ़लके सवाबित[१०] कहते हैं। शरा[११] वाले अपनी भाषा में इसे कुर्सी कहते हैं जैसा कि इस पवित्र आयत में कहा गया है :

"उसकी कुर्सी आकाश और पृथ्वी को आवृत्त किये है[१२]"।

नवम आकाश जो कि महाकाश कहा जाता है इन आकाशों में सम्मिलित नहीं किया गया है, कारण कि यह महाकाश सबको, यहां तक कि कुर्सी, आकाश तथा पृथ्वी को भी आवृत्त किये हुए है।

ज़मीन (पृथ्वी)

भारतीयों के अनुसार पृथ्वी सात परतों में विभक्त की गई है जो कि सप्त तल कहे जाते हैं, जिनमें से प्रत्येक का नाम पृथक् है : अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल हैं। मुसलमानों के मतानुसार भी पृथ्वी सात परतों में विभक्त की गई है जैसा कि इस पवित्र आयत में कहा गया है :

"अल्लाह वह है जिसने सात आकाशों का और उनके अनुकूल सात पृथ्वियों का सृजन किया है?[१३]"

क़िस्मते ज़मीन (पृथ्वी-खण्ड)

विद्वानों ने निवास की जाने वाली पृथ्वी को सात भागों में विभक्त किया है

---

१. मूल पुस्तक में 'लगन'।
२. शनिग्रह।
३. बृहस्पति ग्रह।
४. मंगल ग्रह।
५. सूर्य ग्रह।
६. शुक्र ग्रह।
७. बुद्ध ग्रह।
८. चन्द्र ग्रह।
९. अष्टम अकाश।
१०. स्थिर नक्षत्रों का आकाश।
११. इस्लाम के धर्म शास्त्र के अनुसार आचरण करने वाले।
१२. 'वसेया कुर्सी योहुस् समावाते वल अर्ज़' (क़ुरान २:२५५)।
१३. 'अल्लाहुल् लज़ी ख़लक़ सबआ समावातिन व मिनल अर्ज़े मिसलहुन्ना' (क़ुरान ६४:१२)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस आयत की व्याख्या करते हुए इब्न मसऊद[1] ने (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) कहा है कि, "नरक के जीवन में भी एक समय आयेगा जब कि दीर्घ प्रवास के अनन्तर इसके अन्दर कोई भी नहीं रहेगा", और "स्वर्ग से बाहर आने", का तात्पर्य यह है कि पृथ्वी और आकाशों के नष्ट होने के पूर्व यदि ईश्वर चाहे तो इसके निवासियों को उच्च स्वर्ग (फ़िरदौसे आला) में ले जा सकता है क्योंकि उसकी उदारता असीम है। निम्नांकित पवित्र आयत उपर्युक्त मत का प्रमाण है: "सर्वोत्तम ईश्वरीय आनन्द है जो कि सर्व महान् प्राप्ति है",[2] विशेष रूप से कि ईश्वर के पास एक स्वर्ग है जो कि अन्य स्वर्गों की अपेक्षा उत्कृष्ट है। भारतीय इसे वकुण्ठ कहते हैं और यह भारतीय अद्वैतवादियों के विचार में सर्वोच्च मुक्ति है।

क़यामत (प्रलय)

भारतीय अद्वतवादियों के मतानुसार स्वर्ग या नरक में दीर्घकाल तक निवास कर लेने के पश्चात् महा प्रलय अथवा क़यामते कुबरा होगी। यह इस पवित्र आयत से भी निश्चित हो सकता है: "लेकिन जब मृत्यु से महोत्थान दिवस आता है"।[3] निम्नलिखित आयत भी यही आशय प्रकट करती है: "और दुन्दुभी भी बजेगी इससे वे समस्त जो कि स्वर्ग में हैं और वे समस्त जो कि भूमि पर हैं मूर्छित हो जायेंगे, अतिरिक्त उनके जिनके विषय में अल्लाह की इच्छा (पृथक्)[4] है। यह (अतिरिक्तत्व) आरिफ़ों[5] के समुदाय को सूचित करता है जो कि ज्ञानशून्यता या विचार-शून्यता के प्रभाव से इहलोक तथा परलोक दोनों में मुक्त हैं।

आसमानों, ज़मीनों, स्वर्गों तथा नरकों के विनाश और ब्रह्माण्ड की आयु की समाप्ति के उपरान्त स्वर्ग तथा नरक का भोग करने वाले मुक्ति प्राप्त करेंगे और दोनों ही हज़रते ज़ात[6] में विलीन हो जायेंगे। जैसा कि इस पवित्र आयत में कहा गया है:

"यहां का प्रत्येक (प्राणी) मरणशील है, वैभव और सम्मान के स्वामी, हे ईश्वर तेरा मुख (व्यक्ति) सदैव यहां वर्तमान रहेगा (भोग करेगा[7])"।

---

१. अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद मुहम्मद साहब के बड़े प्रसिद्ध सहाबी (सहचर) थे। उनकी ३२ हि० में मदीने में मृत्यु हुई।

२. 'वा रिज़वानुम् मिनल्लाहे अकबरो ज़ालेका होवल फ़ौज़ुल अज़ीम' (क़ुरान ९:७२)।

३. 'फ़ा इज़ा जाअतित् ताम्मतुले कुबरा' (क़ुरान ७९:३४)।

४. 'व नुफ़ेख़ा फ़िस् सूरे फ़सएक़ो मन फ़िस् समावाते व मन फ़िल अर्ज़े इल्ला मन शा अल्लाहो' (क़ुरान ३९:८)।

५. ईश्वरज्ञों के।

६. सत्व।

७. 'कुल्लो मन अलैहा फ़ानिव व यबक़ा वजहो रब्बोका ज़ुल जलाले वल इकराम (क़ुरान ५५:२६,२७)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

VIII

मुक्ति

मुक्ति का तात्पर्य है कि हज़रते ज़ात में प्रतिनिवेध का विनाश या विलीन होना, जैसा कि इस पवित्र आयत से प्रकट होता है : "और सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का ही आनन्द है जो कि महान् प्राप्ति है।" रिज़वाने अकबर अथवा बैकुण्ठ में प्रवेश करना सबसे बड़ा छुटकारा है। यह मुक्ति कही जाती है।

मुक्ति ३ प्रकार की होती है :

प्रथम : जीवन मुक्ति; भारतीयों के अनुसार अपने जीवन काल में ही 'सत्य'[1] के ज्ञान तथा अवबोध की सम्पत्ति से सम्पन्न होने पर मुक्ति प्राप्त हो जाती है। ऐसा व्यक्ति संसार की समस्त वस्तुओं को एक देखता और समझता है। समस्त कृति एवम् कार्य, व्यापार व्यवहार चाहे अच्छे हों या बुरे, न तो अपने से और न किसी से संबन्धित बताता है। वह अपने आपको तथा अन्य वर्तमान वस्तुओं को पूर्णतः सत्य समझता है और समस्त दशाओं में ईश्वर को प्रकाशित समझता है। समस्त ब्रह्माण्ड को जिसे सूफ़ी आलमे कुबरा[2] कहते हैं और जो ईश्वर का पूर्ण रूप है ईश्वर के शरीर के समान समझता है। उनसुरे आज़म[3] को जो महाकाश होता है सूक्ष्म शरीर अथवा ईश्वर के ललित शरीर के समान समझता है और ईश्वर को उस शरीर की आत्मा और उसको (ईश्वर को) एक निश्चित व्यक्ति समझकर कण से पर्वत तक तथा सदृश्य एवं अदृश्य जगत में उस अद्वितीय सत्व के अतिरिक्त किसी वस्तु को न देखता है और न समझता है। जिस प्रकार एक मनुष्य, जिसे आलमे सग़ीर[4] कहते हैं, विभिन्न तथा असंख्य अंगों को रखते हुए एक व्यक्ति है और अंगों की अधिकता के कारण वह एक से अधिक नहीं, अतः उस ऐक्य सत्व को असंख्य प्रतिनिवेध के कारण एक से अधिक न समझता हो।

शेर

"समस्त संसार, चाहे आत्माओं का, चाहें शरीरों का है एक निश्चित व्यक्ति है जिसे आलम[5] कहा जाता है।"

१, ईश्वर।
२. वृहत् संसार।
३. महतत्व।
४. सूक्ष्म संसार।
५. संसार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसलिए सर्वोच्च और सर्वशुद्ध ईश्वर को इस निश्चित व्यक्ति की आत्मा तथा प्राण समझता हो कारण कि किसी भी सिर से बाल पृथक् नहीं होते। शेख़ सादुद्दीन हुम्मुई[1] कहते हैं :

"सत्य संसार की आत्मा है और रुबाई संसार पूर्ण शरीर है,
आत्मायें, फ़िरिश्ते, इन्द्रिय, ज्ञान, पूर्णतः,
आकाश तत्व, प्रकृति के तीन[2] वर्ग एवं अंश[3],
तौहीद[4] यही है और शेष खेल तमाशा है।"

इसी प्रकार भारतवर्ष के अद्वैतवादी व्यास इत्यादि समस्त ब्रह्माण्ड को जो आलमे कबीर[5] है एक "व्यक्ति" समझते थे और उन्होंने उसके शरीर के अंगों का तदनुसार उल्लेख किया है। इसी प्रकार पवित्र सूफ़ी प्रत्येक समय जब किसी वस्तु पर दृष्टिपात करता है तो समझता है कि महापुरुष के अमुक अंग को जो ईश्वर के अनुरूप होता है देख रहा है।

पाताल जो कि पृथ्वी का सप्तमतल है, महापुरुष के चरणों का अधोभाग है (तलवा है)। रसातल जो कि छठवीं तह है महापुरुष के चरणों का ऊपर का भाग है। शैतान[6] महापुरुष के चरणों की अंगुलि है। शैतान की सवारी के पशु महापुरुष के चरणों के नख हैं। महातल जो कि पृथ्वी का पंचम तल है महापुरुष का शतालिंग है। तलातल जो कि पृथ्वी का चतुर्थ तल है महापुरुष का नरहर (पिंडली) है। सुतल जो कि पृथ्वी का तृतीय तल है महापुरुष की उरुसंधि है। वतल जो कि पृथ्वी की द्वितीय तह है महापुरुष की जंघा है। अतल जो कि पृथ्वी का प्रथम तल है महापुरुष की विशेष इन्द्रिय है।

काल अथवा समय महापुरुष का गतिक्रम है। परजन्य देवता जो कि जन्म का हेतु है महापुरुष के मनुष्यत्व और पौरुषत्व का चिन्ह है। वर्षा महापुरुष का वीर्य है। भूलोक अर्थात् पृथ्वी से आकाश पर्यन्त महापुरुष के नाभि के नीचे का भाग है। तीन दक्षिणी और तीन उत्तरी पर्वत महापुरुष की दाहिनी और बाईं भुजायें हैं। सुमेरु पर्वत महापुरुष का नितम्ब है।

---

१. सादुद्दीन बिन अल मुवय्यद हुम्मुई बहुत बड़े सूफ़ी थे और उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनकी मृत्यु १२५३ ई० में हुई।
२. पशु, वनस्पति तथा खनिज पदार्थ।
३. शरीर के अंग।
४. एकेश्वरवाद।
५. वृहत् संसार।
६. वह प्राणी फ़िरिश्ता जिसने आदम को सिज्दा करना स्वीकार न किया और मानव जाति को मार्गभ्रष्ट करने का बीड़ा उठा लिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

असत्य अरुणोदय का प्रकाश महापुरुष की ऊपर की पोशाक के गोटे के तार हैं। सत्य अरुणोदय का प्रकाश महापुरुष की चादर है और संध्या जब कि संधि प्रकाश दृष्टिगोचर होता है, महापुरुष की ऊपरी पोशाक है जो उसके गुप्त भागों को आवरण में किये हुए है और समुद्र महापुरुष की नाभि, परिधि और गहराई है। बड़वानल अग्नि का स्थान है जो कि समुद्र का जल शुष्क करता रहता है और तूफ़ान नहीं आने देता। क़यामते कुबरा[1] में (ईश्वर) समस्त जल को शुष्क कर देगा; यह महापुरुष के उदर का ताप तथा उष्णता है। नदियां महापुरुष की शिरायें हैं और जिस प्रकार समस्त शिरायें नाभि में पहुंचती हैं, वैसे ही समस्त नदियां समुद्र में जाकर समाप्त होती हैं। गंगा, यमुना और सरस्वती, महापुरुष की मुख्य शिरा हैं। अकंला[2], जम्नान, विकला, जमुना, सखमना और सरस्वती भूलोक, जो कि भूलोक से ऊपर हैं और गन्धर्व देवताओं का निवास स्थान है और जहां से कि समस्त ध्वनियां प्रारम्भ होती हैं,[3] महापुरुष के उदर हैं। क़यामते सुग़रा की अग्नि महापुरुष की प्रातःकालीन क्षुधा है। क़यामते सुग़रा में जलशोषण महापुरुष की तृषा है। स्वर्गलोक जो कि भूलोक के ऊपर है और वैकुण्ठ के भागों में से एक है महापुरुष का वक्षस्थल है जहां सर्वदा प्रसन्नता, खुशहाली तथा आराम है। समस्त तारागण महापुरुष की विभिन्न मणियां हैं। अयाचित दान जो कि पक्षपात् रहित तथा उदारतापूर्ण दान है महापुरुष का दाहिना स्तन है और याचित दान वायां स्तन है। संयम जो कि रजोगुण, सत्वगुण और तमोगुण से विनिर्मित है और प्रकृति कहलाता है, महापुरुश का हृदय है और जिस प्रकार जल की कुमुदनी के श्वेत, रक्त और नीले तीन प्रकार के रंग होते हैं इसी प्रकार हृदय भी जिसका वर्ण जल कुमुदनी के समान है तीन गुणों से युक्त है; यह तीन प्रकार से प्रकट होता है अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश।

ब्रह्मा, जिसका नाम "मन" भी है, महापुरुष के हृदय की गति तथा विचार हैं, विष्णु महापुरुष का स्नेह और दया हैं, महेश महापुरुष का कोप तथा आतंक हैं।

चन्द्रमा जो कि शोक और वेदना की ऊष्मा को शांत करता है महापुरुष का स्मित हास्य एवम् प्रसन्न चितवृत्ति है। रजनी महापुरुष का धनुष है। सुमेरु पर्वत महापुरुष की पीठ की रीढ़ की अस्थि है। सुमेरु पर्वत के दक्षिण और बाम भाग के पर्वत महापुरुष की पसली की अस्थियां हैं। ८ फ़िरिश्ते जो कि कोतवाल हैं महापुरुष के दो हाथ हैं। उन फ़िरिश्तों के प्रधान इन्द्र हैं। वे वर्षा तथा दान के प्रतिपादन करने एवं प्रतिबंन्धित करने, तथा रोकने में पूर्ण शक्ति-सम्पन्न हैं। उदारता प्रदर्शित करना तथा जल वर्षण महापुरुष के दक्षिण हस्त (से संबन्धित) है तथा इनकी प्रभावोपस्थिति वामहस्त (से सबन्धित) है। स्वर्ग की अप्सरायें जो हूरें कहलाती हैं महापुरुष की हस्तरेखायें हैं। फ़िरिश्ते[4] जिनको

---

१. महा प्रलय।

२. इन शब्दों के विषय में कोई ज्ञान नहीं प्राप्त हो सका।

३. उत्पन्न होती हैं।

४. देवता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पक्ष कहा जाता है महापुरुष के हाथ के नख हैं। तीन लोकपाल फ़िरिश्ते महापुरुष के दक्षिण हस्त हैं। यम नामक फ़िरिश्ता महापुरुष की भुजा है। इनके अतिरिक्त अन्य लोकपाल फ़िरिश्ते महापुरुष के वामहस्त हैं। कुबेर फ़िरिश्ता महापुरुष की उरुसंधि है। कल्प-वृक्ष या तूबा[1] महापुरुष का दण्ड है। दक्षिणी और उत्तरी ध्रुव क्रम से महापुरुष के स्कन्ध हैं।

वरुण नाम वाला लोकपाल फ़िरिश्ता, जो कि जलाध्यक्ष है और पश्चिम में निवास करता है, महापुरुष की ग्रीवा की अस्थि है। अनाहत या सुल्तानुल अज़कार महापुरुष की सूक्ष्म ध्वनि है। महर लोक, जो कि स्वर्ग लोक से भी ऊपर है, महापुरुष की ग्रीवा और कण्ठ है। जनलोक जोकि महलोक से भी ऊपर है महापुरुष का शुभ मुख है। संसार की अभिलाषा महापुरुष की चिबुक का गड्ढ़ा है। लोभ, जो कि संसार में है, महापुरुष का निम्न ओष्ठ है। लज्जा तथा मर्यादा महापुरुष का ऊपर का ओष्ठ है। वक्षस्थल, जो कि प्रेम एवम् अनुराग का निवास स्थान है, महापुरुष का दन्तमांस (मसूड़ा) है। समस्त विश्व का भोजन महापुरुष का भोजन है। जल तत्व महापुरुष का तालू और मुख है। अग्नितत्व महापुरुष की जिह्वा है। सरस्वती महापुरुष की वाक्य की शक्ति है। चार वेद अर्थात् सत्य के चार ग्रन्थ महापुरुष के व्याख्यान हैं। माया अथवा इश्क़ जो कि समस्त विश्व के उत्पादन का कारण है महापुरुष का प्रहसन और श्रेष्ठ रसिकता है। संसार की आठ दिशायें महापुरुष के दो कर्ण हैं। अश्विनी, कुमार जो कि अत्यन्त सुन्दर दो फ़िरिश्ते हैं महापुरुष के दो नासिका छिद्र (नथुने) हैं। गन्ध तनमात्रा अर्थात् धूलि तत्व महापुरुष की घ्राणशक्ति है। वायु तत्व महापुरुष की श्वास शक्ति है।

जन लोक तथा तपलोक, जो कि बैकुण्ठ के पंचम और षष्टम विभाग हैं, उसके सत्व के प्रकाश से प्रकाशित हैं और उनका दक्षिणी और उत्तरी अर्ध भाग, महापुरुष के क्रम से दक्षिण और वाम नेत्र हैं। शुद्ध प्रकाश (नूर) जिसको अनादि सूर्य कहा जाता है, महापुरुष के नेत्रों की शक्ति है। समस्त सृष्टि महापुरुष की कृपा दृष्टि है। संसार के दिवस तथा निशा महापुरुष के नेत्रों के क्षण हैं। मित्र नामक फ़िरिश्ता[2] जो कि प्रेम और मित्रता का आयुक्त है और तवास्ता नामक फ़िरिश्ता जो कि कोप का आयुक्त है महापुरुष की दो नेत्र भ्रू हैं।

तपलोक जो कि जन लोक के ऊपर है महापुरुष का ललाट है। सत्यलोक जो कि सब लोकों से ऊपर है महापुरुष का कपोल है। एकेश्वरवाद की आयतें एवं ईश्वरीय पुस्तक महापुरुष के मस्तिष्क की बाहरी झिल्ली हैं। कृष्ण मेघ जो कि महाप्रलय का जल लाते हैं महापुरुष के चिकुर हैं। समस्त पर्वतों की वनस्पति महापुरुष के शरीर के बाल हैं। लक्ष्मी जो कि संसार का धन और श्रृंगार है महापुरुष की सुन्दरता है। देदीप्यमान सूर्य महापुरुष के शरीर की शुद्धता है। भूताकाश महापुरुष के शरीर के रन्ध्र हैं। चिदाकाश महापुरुष के शरीर की आत्मा है। प्रत्येक मानव मात्र की आकृति महापुरुष का निवास स्थान है।

---

१. स्वर्ग के एक वृक्ष का नाम।
२. देवता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इनसाने कामिल[१] महापुरुष का लघु प्रकोष्ठ और निवास स्थान हैं। जैसा कि उसने (ईश्वर ने) दाऊद[२] से (ईश्वर उन्हें शांति दे) कहा था, "हे दाऊद! मेरे लिए एक गृह निर्माण कर", उन्होंने उत्तर दिया, "हे ईश्वर तू निवास स्थान से मुक्त है", ईश्वर ने कहा, "तू ही मेरा निवास स्थान है, अपने हृदय को दूसरों से रिक्त बना।" जो कुछ भी ब्रह्माण्ड में विस्तार से प्राप्त है मनुष्य में जो कि आलमे कबीर[३] है, संक्षेप में सभी वर्तमान है। जो व्यक्ति इस रीति से देखता और समझता है वह जीवन मुक्ति प्राप्त करता है और क़ुरान की यह आयत इस कथन के पक्ष में है, "ईश्वर ने अपनी कृपा से उनको जो कुछ प्रदान किया है उसी में प्रसन्न रहना[४]।"

द्वितीय सर्व मुक्ति अर्थात् प्रत्येक प्रकार के दासत्व से मुक्त होना, "सत्व" में चित्त का लवलीन होना। यह मुक्ति समस्त जीवित प्राणियों के विषय में सर्वत्र सत्य है। क़यामते कुबरा के उपरान्त तथा आकाश, पृथ्वी, स्वर्ग, नरक, ब्रह्माण्ड, रात्रि और दिन के विनाश के उपरान्त सत्व में लवलीन होने के फलस्वरूप मुक्ति प्राप्त होगी। और यह पवित्र आयत इस मुक्ति में प्रमाण है: "और सर्वोत्कृष्ट अल्लाह का ही आनन्द है जो कि सबसे महान् प्राप्ति है।[५] और "अब अल्लाह के मित्र (भक्त) निश्चित ही भयभीत और दुखित नहीं होंगे[६]।"

तृतीय सर्वदा मुक्ति या उत्तरकालीन मुक्ति अरीफ़ (ईश्वरज्ञ) होने से और विकास[७] की प्रत्येक दशा से मुक्ति प्राप्त करने से संबन्धित है, चाहे यह विकास दिन और रात में, चाहे प्रकट जगत में, चाहे अदृश्य जगत में किया जाये, चाहे ब्रह्माण्ड दृष्टिगत हो या न हो चाहे यह माज़ी, हाल या मुस्तक़बिल में हो जिसे भूत, वर्तमान अथवा भविष्य कहते हैं। जब कभी क़ुरान की आयत में है "जन्नत में सर्वदा के लिए स्थायी[८]" रहने का उल्लेख होता है तो यहां जन्नत शब्द का तात्पर्य मारेफ़त[९] से और 'अबदा' इस मुक्ति की नित्यता को प्रमाणित करता है, कारण कि प्रत्येक व्यक्ति के लिये चाहे वह जिस किसी भी अवस्था में हो, ईश्वर के विषय में जानने की योग्यता

---

१. सिद्ध पुरुष।
२. इसराइलियों के बादशाह एवं पैग़म्बर। उनके धर्म की दैवी पुस्तक का नाम 'ज़बूर' है।
३. महान् जगत।
४. 'फ़रेहीना बेमा आताहुमुल्लाहो मिन फ़ज़लेही' (क़ुरान ३:१६९)।
५. 'वा रिज़वानुम मिनल्लाहे अकबरो ज़ालेका होवल फ़ौज़ुल अज़ीम' (क़ुरान ९:७)।
६. 'वअला इन्ना अवलिया अल्लाहे ला ख़ौफ़ो अलैहिम व ला हुम यहज़नून' (क़ुरान १०:६२)।
७. सैर।
८. 'ख़ालेदीना फ़ीहा अबदा'।
९. ईश्वर का ज्ञान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तथा उसकी अनन्त कृपा प्राप्त करना परमावश्यक है। इस प्रकार निम्नांकित दो पवित्र आयतें ऐसे प्राणियों के समूह के लिए हैं जो मुक्ति प्राप्त करते हैं।

"उनका ईश्वर उनको अपनी दया का सुखद समाचार (अपने सुन्दर आनन्द तथा उद्यान की खुशखबरी) प्रदान करता है वहां उनको स्थायी आशीर्वाद प्राप्त होगा, वहां वे हमेशा के लिए निवास करेंगे, निःसंदेह अल्लाह के पास बहुत बड़ा प्रतिफल है।"[१]

"हे मुहम्मदः मोमिनों को शुभ सन्देश दो। जो उत्तम कर्म करते हैं उन्हें अच्छा ही प्रतिफल मिलेगा सर्वशुद्ध और सर्वोच्च ईश्वर की मारेफ़त[२]।

आरिफ़ों के लिए निश्चय ही यह सुन्दर पारितोषिक है, विशेषकर उच्च स्वर्ग की प्राप्ति जहां वे सदैव के लिए निवास करेंगे।"

रोज़ व शब

(अहोरात्र)

सृष्टि और क्षय की दिव्यता : भारतीय अद्वैतवादियों के अनुसार ब्रह्मा की, जो जिबरील के समान हैं, आयु और ब्रह्माण्ड का विनाश, और सृष्टि के दिवस की जो कि दैवत्व का दिवस होता है समाप्ति संसार के अट्ठारह अन्ज वर्षों की है। प्रत्यक अन्ज संसार के एक सहस्र वर्षों के समान होता है जसा कि क़ुरान की इन दो पवित्र आयतों में बताया गया है: "निःसंदेह तुम्हारे ईश्वर के लिए एक दिन तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्षों के समान है"।[३] दूसरी पवित्र आयत भी है: "एक दिन फ़िरिश्ते और आत्मायें उसकी (ईश्वर की) ओर अग्रसर होंगे। उस दिन का परिमाण पचास हज़ार वर्षों का है[४]।" उसका प्रत्यक दिन एक हज़ार वर्षों का होता है जैसा कि भाव क़ुरान की प्रथम पवित्र आयत से स्पष्ट होता है।

इस प्रकार जिबरील की आयु और दिवस के जीवन की अवधि और समस्त विश्व जो कि ब्रह्माण्ड है संसार के अट्ठारह अन्ज वर्षों के बराबर है। भारतीय अद्वैतवादियों के हिसाब से प्रत्यक अन्ज बिना कमी तथा अधिकता के एक हज़ार वर्ष के बराबर होता है। यह भी जानना चाहिये कि उनका (भारतीयों का) "अट्ठारह" संख्याओं का विशेष

---

१. 'योबश्शिरो हुम रब्बोहुम व रहमातिम मिनहो व रिज़वानिव व जन्नातिल हुम फ़ीहा नईमुम् मुक़ीमो खालेदीना फ़ीहा अबदा इन्नल्लाहा इन्दहू अनरून अज़ीम' (क़ुरान ९:२१)।

२. 'व योबश्शिरल मोमेनीनल्लज़ीना यामलूनस् सालेहाते अन्न लहम अजरून हसनम माकेसीना फ़ीहे अबदा' (क़ुरान १८:२,३)

३. 'व इन्ना यौमन इन्द रब्बोका क अल्फ़े सनतिम मिम्मा तउद्दून' (क़ुरान २२:४७)।

४. 'तारोजुल मलायेकतो वरूहो इलैहे फ़ी यौमिन काना मक़दारोहू खमसीना अल्फ़ा सनतिन' (क़ुरान ७०:४)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वर्णन आठ और दस की संख्या पर आधारित है। इनके आगे वे किसी भी वस्तु की गणना संभव नहीं समझते।

"क़यामत हाये सुग़रा[1]" जो कि भूतकाल में हो चुकी है और भविष्य में भी होती रहेगी, खण्ड प्रलय कही जाती हैं जो कि जल के तूफ़ान अथवा अग्नि के तूफ़ान अथवा वायु के तूफ़ान के रूप में प्रकट होती रहती हैं। और इस अवधि के व्यतीत हो जाने पर यह दिवस संध्या में परिवर्तित हो जायेगा और क़यामते कुबरा, जिसको महाप्रलय कहते हैं, होगी, जैसा कि निम्नांकित दो आयतों में निर्दिष्ट है :

"उस दिन जब कि पृथ्वी एक अन्य ही पृथ्वी के रूप में परिवर्तित हो जायेगी[2]" और, "उस दिन जब कि हम स्वर्ग को लपेट लेंगे, जैसे कि लेख को लपेट कर मुट्ठा बना लिया जाता है"।[3]

क़यामते कुबरा के पश्चात् विनाश की रात्रि के समय जो कि प्रकाश के दिवस के समान हैं, समस्त प्रतिनिवेष 'सत्व' में विलीन हो जायेंगे, संसार के अट्ठारह अन्ज वर्षों के समान इसकी अवधि है।

अवस्थात्मा का समय जो कि सखुपत और जबरूत के समान है हज़रते ज़ात[4] की आयु के समान है जो कि मरणशीलों की सृष्टि या विश्व के विनाश से निर्बाध है। क़ुरान की यह आयत इस सखुपत के विषय में प्रमाण है :

"शीघ्र हम निश्चिन्त हो जायेंगे तुमसे, हे जिन्नात[5] तथा मानव (जिनों और मानवों)।" पृथ्वी के जीवन काल में, ईश्वर नासूत[6] की अवस्था में और क़यामत हाये सुग़रा में मलकूत की अवस्था में और क़यामते कुबरा में जबरूत की अवस्था में रहता है।

हे मित्र ! जो कुछ मैंने इस अध्याय में संकलित किया है वह बड़ी खोज, अत्यधिक शोध और अपने कश्फ़ के आधार पर किया है। यद्यपि तुमने किसी पुस्तक में इसे न पढ़ा होगा और न किसी से सुना ही होगा तो भी क़ुरान की इन दो पवित्र आयतों से इसकी अनुरूपता है :

"यदि मेरे यह विचार किसी ज्ञानहीन के कर्ण कुहरों में कटुता के उत्पादक हैं तो मुझे इसका कोई भय नहीं"।

---

१. लघुतर प्रलय।
२. 'योमा तोबद्दलुल अर्ज़ा ग़रल अर्ज़' (क़ुरान १४:४८)।
३. 'योमा नतविस् समाआ क तैयिस् सिजिल लिल कोतोबे' (क़ुरान २१:१०४)।
४. ईश्वर, सत्व।
५. एक प्राणी जिन्हें अग्नि से उत्पन्न बताया जाता है, "दानव"।
६. 'सनफ़रुग़ो लकुम अय योहस् सक़लाने' (क़ुरान ५५:३१)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

X

बे निहायतीये अद्वार (कालचक्र की अनन्तता)

हिन्दुस्तान के विद्वानों के अनुसार, सर्वोच्च ईश्वर केवल घस्र और तमिस्रा की सीमा से ही रहित नहीं है अपितु जब ये तमिस्रायें समाप्त हो जायेंगी, दिवस पुनः प्रकट होंगे और जब ये घस्र समाप्त हो जायेंगे तमिस्रा पुनः प्रकट होंगी। यह क्रम बिना समाप्ति के चलता रहेगा। इसे अनादि प्रवाह कहते हैं। कालचक्र की अनन्तता पर दृष्टि रखते हुए ख्वाजा हाफ़िज़[1] ने (ईश्वर उन पर दया करे) कहा है:

शेर

"मेरे प्रियतम की और मेरी कहानी अनन्त है।
क्योंकि जिसका आदि नहीं है उसका अन्त नहीं हो सकता।"

उसके सत्व के प्रकाश और गोपन की जो भी विलक्षणता प्राथमिक अहोरात्रों में प्रकट हो चुकी है आगामी अहोरात्रों में भी ठीक उसी रीति से पुनः प्रगटित होंगी, जैसा कि इस पवित्र आयत में कहा गया है:

"जैसे कि हमने प्रथम सृष्टि का उत्पादन किया वैसे ही हम इसको पुनः उत्पन्न करेंगे।[2]" इस लिए इस कालचक्र की समाप्ति के अनन्तर मानवों के पिता आदम की दुनियां ठीक उसी प्रकार से पुनः प्रकट होगी और इस प्रकार यह क्रम अनन्त होगा। क़ुरान की यह आयत:

"क्योंकि प्रारम्भ में उसने तुमको सर्वाग्र उत्पन्न किया (लाया) इसलिए वह तुमको फिर उसी प्रकार पैदा करेगा"[3] भी इसी मत की सत्यता का प्रमाण है।

यदि कोई व्यक्ति सन्देह करे और कहे कि हमारे पैग़म्बर मुहम्मद साहब (ईश्वर उनको शांति दे) का अन्तिम पैग़म्बर होना इस व्याख्या से सिद्ध नहीं होता तो मैं उनसे कहूँगा कि हमारे पैग़म्बर (ईश्वर उनको शांति दे) आगामी दिन भी ठीक-ठीक उसी रूप में पुनः प्रकट हो जायेंगे और उस दिन भी वे (अंतिम पैग़म्बर) कहे जायेंगे।

---

१. ख्वाजा हाफ़िज़: फ़ारसी का प्रसिद्ध कवि जिसकी मृत्यु शीराज़ में १३८९ ई० में हुई।
२. 'कमा बदाना अव्वला खल्किन नोईदोहू' (क़ुरान २१:१०४)।
३. 'कमा बदाकुम तऊदून' (क़ुरान ७:२९)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मेराज[1] की रात्रि की यह हदीस इसी मत को स्पष्ट करती है।

यह कहा जाता है कि हमारे पैग़म्बर (मुहम्मद साहब) ने (ईश्वर उनको शांति दे) अवाध गति से आगे बढ़ती हुई एक उष्ट्र पंक्ति देखी, जिनमें से प्रत्येक के ऊपर दो-दो वक्स लदे हुए थे। प्रत्येक वक्स में हमारे संसार के समान एक-एक जगत था और ऐसे प्रत्येक जगत में मुहम्मद साहब के समान एक मुहम्मद थे। मुहम्मद साहब ने जिबरील से पूछा, "यह क्या है।" उत्तर मिला, "हे ईश्वर के रसूल मैं अपने जन्म के समय से इस उष्ट्र-पंक्ति को वक्सों को अपने ऊपर लादे हुए जाते देख रहा हूँ किन्तु मैं भी उनके वास्तविक महत्व से अनभिज्ञ हूं।" यह संकेत कालचक्र की अनन्तता की ओर है।

ईश्वर को उसके वरदानों के लिए धन्य है जिसने इस फ़क़ीर मुहम्मद दारा शिकोह को जिसे कोई दु:ख नहीं, "मजमउल वहरैन" नामक इस पुस्तक को १०६५ हि० (१६५४-५५ ई०) में ४३ वर्ष की अवस्था में समाप्त करने का सम्मान प्रदान किया।

समाप्त

---

१. मुसलमानों के विश्वास के अनुसार मुहम्मद साहब ने जिबरील के साथ जाकर अपनी अवस्था के ५२वें वर्ष में रबी-उल-अव्वल मास में ईश्वर से एक रात्रि में भट की थी और भेंट करके लौट आये थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

••स्कैन्ड / Scanned••

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE